पंचम अध्याय

"आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के स्त्री पात्र"

ऐतिहासिक पात्र

अर्ध-ऐतिहासिक पात्र

काल्पनिक पात्र

वर्गगत पात्र

व्यक्ति पात्र

ऐतिहासिक पात्र-:

आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी ने अपनी कहानियों, उपन्यासों आदि के द्वारा तत्कालीन ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन अत्यंत ही सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है| उनकी कहानियों में स्त्री- पुरुष, पशु- पक्षी, जानवर इत्यादि प्रकार के जीवों का भी वर्णन कहीं-कहीं देखने को मिलता है, जो समाज को एक नई दिशा प्रदान करता है| उनकी ऐतिहासिक कहानियां हमारी रगों में वीरता का संचार करती हैं, जिसके अध्ययनोपरांत हम यह स्वीकार करते हैं कि चाहे पुरुष हो या स्त्री सभी बराबर हैं, दोनों एक सिक्के के दो पहलू होते हैं| सभी के अन्दर वही खून बहता है| जब खून एक है तो कोई अलग-अलग कैसे हो सकता है? हमारे देश में वीरों की कमी नहीं रही है| समय-समय पर वीर जवानों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर इस देश की रक्षा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है| आचार्य जी की कुछ कहानियां ऐसी भी हैं जिनको पढ़कर पाठक देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत हुए बिना नहीं रह सकता है| आचार्य जी की कहानियां यह संदेश देती हैं कि अपने देश की आन-बान और शान के लिए यदि हमें अपने प्राणों की आहुति भी देनी पड़े तो हमें कदम पीछे कभी नहीं हटाना चाहिए| इतिहास साक्षी है कि पुरुषों के साथ-साथ नारियों ने भी अपने साम्राज्य को सम्भाला है एवं अपने कठोर नियमों का पालन भी कराया है। जैसा मुगल शासन काल में भी देखने को मिलता है कि-

इतिहास में चर्चा है कि नूरजहाँ ने अकबर के प्रिय नवरत्नों में से एक अब्दुर्रहीम खानरवाना के बेटों के सिर कटवा दिये थे और लाहौर में स्वयं खानखाना को, बैल की खाल में सिलवा कर अपमानित किया था|

1.वीर बादल-

इस कहानी में चित्तौड़गढ़ के राणा भीमसिंह की पत्नी पद्मिनी के रूप सौन्दर्य के प्रति अलाउद्दीन के आकर्षण तथा चित्तौड़ के किले पर उसके आक्रमण का ऐतिहासिक वर्णन किया गया है| इस कहानी में मात्र एक स्त्री पात्र पद्मिनी है।

पद्मिनी-

पद्मिनी राजस्थान के चित्तौड़गढ़ की महारानी थी। वह अत्यंत ही सुन्दर, आकर्षक, सुशील, रूपवती, गुणवती और साहसी नारी थी| प्रसिद्ध विद्वान कर्नल टाड का मानना है कि-"सुंदर पद्मिनी ने उस समूह का नेतृत्व किया, जिसमें समस्त स्त्री सौन्दर्य एवं यौवन सम्मिलित था, जिसे तातारों की काम पिपासा के द्वारा लांछित होने का भय था|"[1]

जिसकी सुन्दरता के चर्चे दिल्ली सुल्तान अलाउद्दीन के कानों तक पड़ चुकी थी| सुल्तान ने पद्मिनी को अपने अधिकार में करने के लिये चित्तौड़ के किले पर कई बार आक्रमण किया| वह 9 मास तक किले को घेरे रहा फिर भी उस पर अपना अधिकार न जमा सका| अंत में हारकर वह राणा भीमसिंह से संधि कर लेता है और कपट पूर्वक उनको

बंदी बनाकर अपनी छावनी में ले जाता है।| रानी पद्मिनी अपने पति भीमसिंह को छुड़ाने के लिए अपने पुत्र बादल को तैयार कराते हुए कहती हैं कि- "बादल क्या तुम अपने काका जी को छुड़ाने का साहस कर सकते हो? हाँ काकी जी मैं अभी अपने प्राण दे सकता हूँ| परन्तु बेटे, शत्रु छली और बली है, हमें छल और बल से काम लेना होगा? छल और बल से, कैसे काकी जी?

मैं सुल्तान से कहलाए देती हूँ, मैं स्वयं उसके पास आने को राजी हूँ| आप राणा को छोड़ दें|

छी-छी काकी, क्या आप उस म्लेच्छ सुल्तान के पास जायेंगी?

नहीं बेटे, मेरी जगह मेरी डोली में तुम जाओगे|

क्या मैं?"[2]

इस प्रकार रानी पद्मिनी सात सौ डोलियों में राजपूतों को भरकर उन्हें अलाउद्दीन के पास भेजकर अपने प्राणों से प्रिय पति को छुड़ा लेती हैं। इस तरह की कुशल कूटनीति तथा राजनीति रानी पद्मिनी के साहस का परिचय देता है, जिसे कोई वीर नारी ही कर सकती है, क्योंकि कूटनीति का कूटनीतिपूर्वक ही बदला लिया सकता है| पद्मिनी ने अपने पति के साथ-साथ चित्तौड़ के किले को भी सुरक्षित कर लिया| उसने राजपूत सैनिकों तथा बादल और गोरा के सहयोग से अलाउद्दीन को दिल्ली भागने पर मजबूर कर दिया| इस नारी की बुद्धि और साहस को इसी बात से आंका जा सकता है कि राज्य की सुरक्षा हेतु वह अपने

शरीर की सुन्दरता को दुश्मन अलाउद्दीन के समक्ष प्रस्तुत करने पर तैयार हो जाती है| अपनी बुद्धि और विवेक के कारण ही वह दुश्मन के सामने स्वयं प्रत्यक्ष रूप में न जाकर अपितु एक आइने में अपनी झलक कुछ पल के लिए उस धूर्त अलाउद्दीन को दिखलाती है| इस तरह के पात्र आचार्य जी की ऐतिहासिक कहानियों में अक्सर दिखाई पड़ते हैं, जो अपनी इज्जत और राष्ट्र के सम्मान को अपने पराक्रम एवं बुद्धिमत्ता के बल पर सुरक्षित करते हैं।| यहां पद्मिनी का चरित्र उत्कृष्ट और उज्ज्वल दिखाई पड़ता है| उसके अन्दर क्लेश, घृणा, ईर्ष्या और लोभ तनिक भी नहीं है| वह एक वीर और साहसी होने के साथ-साथ आदर्श नारी भी है|

2.नूरजहाँ का कौशल-

इस कहानी में जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ का चरित्रांकन किया गया है| वह एक वीर, साहसी और कुशल शासिका के रूप में चित्रित है| कहने को तो मुगल साम्राज्य पर जहाँगीर का शासन था, परन्तु वास्तविक रूप में नूरजहाँ ही पूरे साम्राज्य पर अपने शासन के द्वारा नियत्रण रखती थी| वह जिसे चाहती उसे दण्ड देती, जिसे चाहती उसे माफ़ कर देती और जिसे चाहती उसे अपने दरबार में नौकरी देती थी। वह जिसे चाहती उसे नौकरी से बेदखल भी कर देती थी। इस कहानी के स्त्री पात्रों में नूरजहाँ ही एक स्त्री पात्र के रूप में उभरकर सामने आती है।

नूरजहाँ-

नूरजहाँ आसफ उद्दौला की बहन तथा शेर अफगन की विधवा थी| नूरजहां का नाम पहले मेहरून्निसा था| जहाँगीर से विवाह हो जाने के बाद वह नूरजहाँ के नाम से प्रसिद्ध हो गई| वह अत्यंत सुकोमल और सुंदर और आकर्षक स्त्री थी। जिसे देखकर कोई भी राजा उसका मुरीद हो जाता था| इन सबके साथ-साथ वह एक वीर और कुशल शासिका भी थी| मुगलकाल के शासन में वह सम्राट जहाँगीर की बेगम होने के बावजूद सारे राजकाज को स्वयं भी सम्भालती थी| जहाँगीर शराब, व्यसन इत्यादि का बहुत प्रेमी था| वह शराब के नशे में अपने राज्य की शासन व्यवस्था को भूलता जा रहा था| धीरे-धीरे राज्य में काफी नुकसान और अव्यवस्थाएं फैलने लगीं| नूरजहाँ ने अपनी बुद्धिमत्ता और विवेक के बल पर मुगल साम्राज्य को अपने हाथों में ले लिया और कुशल शासन चलाने की बागडोर को बेहतर अंजाम देने की दिशा में कार्य करना प्रारम्भ किया| जैसा कि नूरजहाँ के सम्बन्ध में प्रसिद्ध इतिहासकार सतीश चन्द्र जी अपनी पुस्तक 'मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति' में लिखते हैं कि- "कुछ इतिहासकारों का मत है कि अपने पिता और भाई के साथ तथा खुर्रम से मिलकर नूरजहाँ ने एक गिरोह बना लिया था, जिसने जहाँगीर को इस तरह नियंत्रण में कर लिया था कि इस गिरोह के समर्थन और सहयोग के बिना कोई भी अपने सरकारी जीवन में आगे

नहीं बढ़ सकता था| इससे दरबार दो गुटों, नूरजहाँ का गिरोह और उसके विरोधियों में बंट गया|"[3]

लेखक ने नूरजहाँ और जहाँगीर के प्रेम की तुलना कबूतर और कबूतरी के जोड़े से की है, क्योंकि दोनो में आपसी तकरार होने पर भी प्रेम कभी कम नहीं होता था| महावत खां को आज्ञा पालन न करने पर अपने दरबार से निकाल देने के पश्चात् जब महावत खां उसकी जान लेना चाहता था तब जहाँगीर उसी महावत खां से अपनी पत्नी नूरजहाँ की जान की भीख माँगते हुए दिखाई पड़ते हैं "नूरजहाँ की जान बख्श दो| मैं तुमसे यह भीख मांगता हूँ|"[4]

नूरजहाँ की जान बचाने के लिए मुगल सम्राट को जान की भीख मांगना पड़ता है, यह प्रेम नहीं तो क्या है| यहाँ राजकाज से बढ़कर प्रेम ही सर्वोपरि है| एक बार जब बादशाह जहाँगीर हाथी पर बैठकर शिकार खेलने जाते हैं तो नूरजहाँ भी महावत खां के कहने पर साथ ही बैठती हैं| हाथी के हौदे को ढीला देखकर वह बिना विचलित हुए महावत खां को हौदा ठीक करने की आज्ञा देती हैं| जब तक महावत खां वहाँ पहुँचता है, उससे पहले ही वह वीर नारी नूरजहां बड़ी चालाकी से वीरता पूर्वक जहांगीर को बचाने के लिए एक नया कदम उठाती है| "क्षण भर में नूरजहाँ बिजली की भांति कूदकर हाथी के गर्दन पर आ बैठी और जोर से अंकुश का एक वार करके हाथी को नदी में हूल दिया| क्षण भर में देखते-देखते यह सब कौतुक हो गया| जब तक महावत खां दौड़े, तब तक हाथी

दरिया में पहुँच चुका था| बादशाह ने विस्मित होकर नूरजहाँ के साहस को सराहा|"[5]

जिस प्रकार एक बार बादशाह जहाँगीर ने नूरजहाँ की जान बचाने के लिए, महावत खां से जान बक्ष देने की भीख माँगी थी उसी प्रकार से आज नूरजहाँ बादशाह जहाँगीर को मृत्यु से बचाने के लिए अपनी जान की परवाह किए बगैर उन्हें मौत के मुंह से बचा लेती है| वरना हाथी पर से गिरकर नूरजहाँ और जहाँगीर दोनों को ही शायद अपनी जान गंवानी पड़ती| जब जहाँगीर को नूरजहाँ बड़ी बारीकी और फुर्ती से बचाती है तो यह दृश्य देखकर जहाँगीर ने नूरजहाँ से कहा- बादशाह तुम हो या मैं? नूरजहाँ से सम्बंधित एक उपन्यास मथुरा प्रसाद शर्मा ने लिखा है जिसका नाम 'नूरजहाँ बेगम व जहाँगीर' है| "इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें इतिहास अधिक और कल्पना कम है| वस्तुतः नूरजहाँ का जीवन स्वंय उपन्यास है| लेखक ने नूरजहाँ और जहाँगीर के चिर परिचित वृत्तान्त को कथा क्रम में ढालकर उपस्थित किया है|"[6]

3.रघुपति सिंह-

इस कहानी में पात्रों में केवल एक स्त्री पात्र का वर्णन किया गया है वह भी उसके नाम का वर्णन नहीं मिलता| उसे रघुपति की स्त्री या पत्नी से ही पूरी कहानी में लेखक ने दर्शाया है, जो एक पतिव्रता तथा कर्त्तव्य परायण स्त्री है| स्त्री किसी की भी हो, हर स्त्री यही चाहती है कि

उसका पति उसके पास और सुरक्षित रहे| उसे किसी प्रकार की कमी न होने पाये| वह रात दिन किसी भी परिस्थिति में अपना जीवन गुजार सकती है परन्तु अपने पति से दूर रहना वह कभी पसंद नहीं करेगी। एक पत्नी के लिए उसका पति ही उसकी दुनिया होती है, वह उसके जीवन का सबसे प्रमुख आधार होता है। शायद इसीलिए पति का स्थान एक पत्नी के लिए देवता समान बताया जाता है| जब पति पर कोई संकट आये तो भला संसार की वह कौन सी पत्नी होगी जो अपने पति की रक्षा नहीं करना चाहेगी| वही हाल होता है इस कहानी में जब रघुपति अपने बीमार बच्चे और पत्नी से मिलने के लिए जाने लगता है तो मुगल सैनिक इस शर्त के साथ जाने की अनुमति देता है कि मिलने के पश्चात रघुपति स्वयं को गिरफ्तार करवा देगा परन्तु जब वह पत्नी तथा बीमार पुत्र से मिलता है तो उसके दोनों आँखों से अश्रु की धारा बहने लगती है तथा पत्नी भी उसे वापस जाने के लिए एक दूसरा रास्ता बताती है ताकि उसका पति रघुपति सिंह मुगल सैनिकों की गिरफ्तारी से बच जाये| रघुपति की पत्नी उससे कहती है कि “ठहरो, मैं गुप्त द्वार खोले देती हूँ, उसी राह से निकल जाओ, रघुपति ने स्त्री को छाती से लगा लिया और रोने लगे| उन्होंने कहा- मेरी प्यारी! रघुपति सिंह की पत्नी होकर ऐसी बात कभी मत करना| शत्रु तुम्हारे स्वामी को झूठा, दगाबाज कहकर पुकारे, इससे तो यही अच्छा है कि उसके शरीर की बोटियां काट डालें| सुख में तो सभी की मति बनी रहती है सो आपत्ति में यदि तुम भी

चलबुद्धि हो जाओगी तो साधारण स्त्री और रघुपति की पत्नी में क्या अन्तर रहेगा? राजपूतानी ने कातर हृदय से क्षमा मांगी|"[7]

शास्त्री जी की कहानियों के स्त्री पात्रों में एक पुत्र के लिए एक माता, एक पति के लिए एक स्त्री, एक भाई के लिए एक बहन आदि का सुन्दर चरित्रांकन मिलता है| ये वीर- साहसी स्त्रियां युद्ध क्षेत्र में भी अवसर आने पर, अपने चूड़ी भरे हाथों से बखूबी तलवार भी उठाना जानती हैं तथा दुश्मनों के दांत भी खट्टे करना अच्छी तरह जानती हैं|

4.भिक्षुराज-

यह बौद्धकालीन बहुप्रसिद्ध ऐतिहासिक कहानी है जिसमें सम्राट अशोक की पुत्री महेन्द्र कुमारी तथा सिंघल द्वीप के राजा उतिय की पत्नी अनुला का बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में किये गये उत्कृष्ट प्रयासों की सुन्दर झांकी प्रस्तुत की गई है|

महेन्द्र कुमारी-

यह ससागरा के यशस्वी सम्राट अशोक की पुत्री थी, जो अपने भाई महेन्द्र कुमार के साथ सिंघल द्वीप में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु गयी थी| 12 बौद्ध भिक्षुओं में यह एक मात्र महिला थी जो अपने सुखों की तिलांजलि देकर राजभवन के सुख-ऐश्वर्य को छोड़कर अपने भाई महेन्द्र कुमार के साथ एक अपरिचित स्थान पर हमेशा के लिए निकल

निकल पड़ती है। जो महेंद्र कुमारी कभी राजमहलों में तरह-तरह के व्यंजनों का आहार करती थी, वही देश की रक्षा के लिए, समाज को सत्य, अहिंसा और तप का पाठ पढ़ाने के लिए आज गांव-गांव, पहाड़ों और जंगलों में टहल-टहलकर एवं सूखी रोटी खाकर अपना जीवन यापन करती है| धन्य है ऐसी धरती जो इस प्रकार की संतानें पैदा करती है और समाज को, देश को एक न एक वीर प्रदान कर रही है| जिस प्रकार मीराबाई ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर सम्पूर्ण जीवन भगवान श्री कृष्ण के चरणों में समर्पित कर दिया था। उसी प्रकार इस कहानी में स्त्री पात्र महेन्द्र कुमारी ने अपने समस्त सुखों को दरकिनार करते हुए भगवान बुद्ध के चरणों में स्वयं को समर्पित कर दिया और भिक्षावृत्ति करके अपना पेट पालते हुए गौतम बुद्ध के उपदेशों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करती है| गांव-गांव, घर-घर जाकर धीरे-धीरे समस्त सिंहलद्वीप को सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह इत्यादि का पाठ पढ़ाती है| अन्ततः सभी बौद्ध भिक्षु बनकर अपना जीवन यापन करते हैं|

अनुला-

यह सिंहलद्वीप के राजा तिष्य के छोटे भाई उत्तिय की पत्नी थी| महेन्द्र कुमारी तथा अन्य बौद्ध भिक्षुओं से सदाचार की बातें सुनकर यह बौद्ध भिक्षुणी बन जाती हैं और बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार करने के लिए सभी भिक्षुओं के साथ चली जाती है|

5. जैसलमेर की राजकुमारी-

इस कहानी में महाराव रत्नसिंह की पुत्री रत्नवती के साहस और पराक्रम को वर्णित किया गया है| स्त्री पात्र के रूप में केवल रत्नवती ही उभरकर आती है|

रत्नवती-

राजकुमारी रत्नवती अत्यंत ही वीर और साहसी कन्या थी| वह बचपन से ही वीरता पूर्वक कार्य करती रहती थी जिसके परिणामस्वरूप वह वीरता में अत्यत निपुण भी हो गई थी| एक बार जब उसके पिता श्री महाराव रत्नसिंह जैसलमेर के भी पत्थर से पत्थर मिला है, उसकी रक्षा मैं करूंगी|”[8]

किले को लेकर गंभीर चिंता में थे तो यह कन्या अपने पिता को आश्वस्त हुए कहती है कि “पिता दुर्ग की चिंता न कीजियेगा| जब तक उसका एक राजकुमारी ने अलाउद्दीन की सेना का मुकाबला करने के लिए मर्दानी पोशाक पहनकर अरबी घोड़े पर सवार हो गई| उसके कमर में दो तलवारें लटक रहीं थीं और पीठ पर तरकश, हाथ में धनुष लेकर अपने दुर्ग की रक्षा के लिए उसने प्रस्थान कर दिया| उसकी कुछ सहेलियां भी उसके साथ किले की रक्षा हेतु गईं| उसने यवन सैनिकों का मुकाबला डटकर किया| जब यवन सैनिकों ने किले के बुर्ज पर आक्रमण किया तब राजकुमारी रत्नवती पूरी शक्ति के साथ उन पर प्रहार करने लगी “जब शत्रु आधी दूर तक दीवारों पर चढ़ आये तब भारी पत्थरों के ढोंके और

गर्म तेल की वह मार पड़ी कि शत्रु सेना छिन्न-भिन्न हो गई| लोगों के मुंह झुलस गये| कितनों की चटनी बन गई| हजारों तौबा-तौबा करके प्राण लेकर भागे, जो प्राचीर तक पहुंचे उन्हें तलवार के घाट उतार दिया गया|”[9]

इस तरह यवन सेना हारकर पीछे की ओर हट गई और अन्ततः अलाउद्दीन ने महाराव रत्नसिंह से संधि कर लिया| राजकुमारी रत्नवती अपने पिता को दुर्ग की रक्षा के लिए दिए गए गये वचन का, अपनी जान पर खेलकर पूर्णतः पालन करती है| शास्त्री जी इस कहानी में एक राजकुमारी की वीरता, दृढ़ प्रतिज्ञा और उसके अदम्य साहस को दिखाकर, आज की नारियों में भी उसी वीरता और पराक्रम का संचार करना चाहते हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों में कभी किसी युवती को अपनी तथा देश की रक्षा के लिये किसी दूसरे पर मोहताज न होना पड़े|

6. चौथी भांवर:

इस कहानी में आचार्य जी ने एक ऐसी राजकन्या का वर्णन किया है जो अत्यन्त बुद्धिमान, वीर तथा मर्यादा में रहना जानती है| वह अपने पिता की लाज को मिट्टी में मिलाना नहीं चाहती है जबकि भीमसिंह उसे बार-बार अपने साथ ले जाने के लिये कहता है| वह अपनी बुद्धि के बल पर भीमसिंह सिंह को समझाती है कि यदि तुम सच्चे राजपूत हो तो मुझे कायर की भांति न ले जाकर अपितु मेरा हरण करके ले चलो|

राजकुमारी इच्छिनी-

यह राजकुमारी आबू के पंवार महाराज विजयपाल सिंह की कन्या थी। यह अत्यंत सुंदर और आकर्षक थी, जिसे देखने के पश्चात गुर्जराधिपति के भाई भीमसिंह देव उसे अपनी रानी बनाना चाहते थे, परन्तु उसमें कई बाधाएं आयीं| चूँकि विजयपाल सिंह, भीमसिंह के भाई वीरपाल सिंह के सच्चे मित्र और कृपा पात्र थे। इसलिए वह अपने भाई के मित्र की कन्या को प्राप्त करने के लिए युद्ध नहीं करना चाहते थे परन्तु जब भीमसिंह देव उस राजकन्या इच्छिनी से अपने प्रेम का निवेदन करते हैं और उसे अपने साथ जाने के लिये कहते हैं तो कन्या इनकार कर देती है| तत्पश्चात भीमसिंह उससे भीख मांगते हुए कहते हैं कि मैं भीख में तुम्हें प्राप्त करना चाहता हूँ| तब इच्छिनी एक राजपूत राजा को यह समझाते हुए कहती है कि “कैसी धिक्कार के योग्य बात है कुमार! क्या कहा? धिक्कार के योग्य? क्या आप गुर्जराधिपति के भाई हैं? हूँ तो.... ‘और गुजरात महाराज के उत्तराधिकारी भी?’ निःसंदेह! और उस तलवार के धनी भी, जिसका यश देश-भर में विख्यात हो रहा है? मैं वही हूँ!

और आप भिक्षा मांगेंगे एक कुमारी की? आपको एक बात मालूम है राजकुमार?

कौन बात?

वीर नर जो विशुद्ध क्षत्रिय होते हैं, वे कन्या मांगते नहीं हैं-हरण करते हैं!”[10]

इस कहानी में यह देखने को मिलता है कि एक पराक्रमी गुर्जराधिपति का भाई जो कि गुजरात साम्राज्य का भावी उत्तराधिकारी है, वह एक कन्या के मोह में इस प्रकार पड़ जाता है कि उसे यह भी अहसास नहीं होता है कि वह राजा के समान है। वह एक लड़की के लिए उससे प्रेम की भीख मांग रहा है| यह एक राजपूत के लिये अत्यंत निंदनीय है, जिसे समझाते हुए वह कन्या उसे उसके कर्त्तव्य का बोध कराती है| शास्त्री जी की कहानियों में हमें हर वर्ग के पात्र दिखाई पड़ते हैं| कुछ पात्र तो अपनी आन-बान और शान के लिए अपनी गर्दन तक कटा देते हैं मगर अपने आत्मसम्मान, अपने कर्त्तव्य के प्रति विचलित नहीं होते हैं। इस कहानी में एक पंवार कन्या, एक राजपूत को उसका कर्त्तव्य बता रही है, यह कितनी बड़ी बात है| वह भी भीमसिंह देव से प्रेम करती थी, उसके साथ शादी करके जीवन यापन करना चाहती थी किन्तु वह यह भी चाहती थी कि राजपूती जीवन में जैसा सदियों से होता आया है, वैसा ही आगे भी हो इसलिये वह भीमसिंह देव से भीख में मांगने के बजाय अपना हरण करने को कहती है| यहां प्रेम से बढ़कर राजपूती मर्यादा रूपी संस्कार, संस्कृति का अत्यधिक महत्व लेखक ने दिखाया है|

7. **सोया हुआ शहर:**

यह एक ऐतिहासिक घटना पर आधरित कहानी है| मुगलकालीन साम्राज्य के बारे में यह बताती है कि उस समय अकबर ने किस प्रकार अपनी राजधानी फतेहपुर सीकरी से आगरा बदली थी| आगरा शहर उस समय एक छोटा सा कस्बा, नदी के तट पर स्थित था| आज की तरह इतनी उन्नति नहीं की थी| उस समय आगरे के विषय में बताते हुए आचार्य जी लिखते हैं कि "आगरा तब एक छोटा सा गाँव जमुना तट पर था| वहाँ न ताज था, न सिकन्दरा न किनारी बाजार था, न भव्य किला| जब दोपहर की तेज धूप में तपी धूल के बवंडर को लेकर हवा सांय-सांय आवाज करती उठती थी| तब आगरा की फूस की झोपड़ियां हिल उठती थीं|"[11]

आचार्य जी लोगों को यह बताना चाहते हैं कि जो लोग आगरा के ताजमहल को देखकर आते हैं और उस शहंशाह शाहजहाँ के अन्तिम बेबसी के दिनों के लिए करुणा का भाव प्रकट करते हैं और लाचार ही लौट आते हैं| बहुत किया तो उन्होंने सिकन्दरा का चक्कर लगाया तथा इसके पश्चात सुप्रसिद्ध आगरे की दालमोठ और पेठे की छोटी सी पोटली बांधी और समझते हैं कि हमने पूरा आगरा घूम लिया| उस आगरा के पार्श्व में ही एक ऐसा शहर भी है, जो सदियों से सोया हुआ सा प्रतीत हो रहा है उसे फतेहपुर सीकरी कहते हैं| इसका वर्णन करते हुए आचार्य जी अपनी कहानी सोया हुआ शहर में लिखते हैं कि "आगरा के पार्श्व में एक सोया हुआ शहर भी है जिसका प्रत्येक निवासी सो रहा है| प्रत्येक भवन,

प्रत्येक महल, प्रत्येक पत्थर सो रहा है| अनन्त, अटूट नींद में ऐश्वर्य और विलास से सहस्रों थककर, या ऊबकर जहां जागृत पीर शेख सलीम की उज्ज्वल समाधि है और अकबर की भांति जिस समाधि पर आज भी नर-नारी पुत्र की भीख मांगने जाते हैं| जहां जीती जागती सुन्दरियों को गोट बनाकर शतरंज खेली जाती थी| जहां जोधाबाई ने मुगल हरम में राधामाधव की मूर्ति स्थापित की थी। जहां विश्व विख्यात बीरबल, खानखाना रहीम, विद्वान फौजी बन्धु और कट्टर मुल्ला अब्दुल कादिर उस बड़े मुगल के चरणों में बैठकर भारत के साम्राज्य की तलवार और कलम से व्यवस्था करते थे| जहां तानसेन और बैजू बावरा ने अपनी तान से वायुमंडल को पुलकित किया था|"[12]

बादशाह अकबर ने उस फतेहपुर सीकरी को छोड़कर आगरा को अपनी राजधानी बना लिया था। जबकि उस समय फतेहपुर सीकरी में बड़े-बड़े महल वगैरा तैयार हो रहे थे लेकिन फिर भी बादशाह अकबर ने आगरा को ही अपनी राजधानी बनाया था| जब अकबर अपने साम्राज्य का विस्तार करने के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त हुआ तो उसका पुत्र जहाँगीर साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना| तब तक फतेहपुर सीकरी सुनसान, खण्डहर तथा एक दलित-मलिन विधवा की तरह अपनी सम्पूर्ण श्री को खो चुका था|

नूरजहाँ-

नूरजहाँ जहाँगीर की पत्नी थी जिसने मुगल साम्राज्य को अपने अधीन कर लिया था, क्योंकि उसका पति सम्राट जहाँगीर अफीम और शराब के अत्यधिक सेवन के कारण राजकाज को सकुशल नहीं चला पा रहा था| साम्राज्य के प्रजातंत्र का उस पर से भरोसा उठता जा रहा था| जहाँगीर की कमजोरियों का फायदा उठाते हुए नूरजहाँ ने मुगल साम्राज्य की बागडोर अपने हाथों में ले लिया और अपनी कुशल नीति के द्वारा सारे काम-काज करवाने लगी| वह जिसे चाहती थी उसे सजा देती और जिसे चाहती उसे माफ कर देती| वह अगर चाहती तो किसी को भी मृत्यु दण्ड दे सकती थी। उसकी आज्ञा ही अन्तिम सत्य माना जाने लगा| धीरे-धीरे राज्य में उसके बहुत से विरोधी भी उत्पन्न हो गये। वे साम्राज्ञी नूरजहाँ से सदैव अप्रसन्न रहते थे| नूरजहाँ का पहला विवाह शेर अफगन नामक एक ईरानी से हुआ था परन्तु बंगाल के मुगल सूबेदार के साथ युद्ध में शेर अफगन की मृत्यु हो गई थी| शेर अफगन एक ईरानी था| नूरजहाँ का विवाह 1611 ई. में माना जाता है| मीना बाजार में जहाँगीर और नूरजहाँ की अकस्मात भेंट हुई थी और उसके पश्चात उनका विवाह हो गया था| नूरजहाँ अपने समय में बहुत ही राजनीति के साथ शासन कर रही थी| उसने अपने भाई आसफ खान और शाहजहां को भी मिला लिया था, जिससे उसका साम्राज्य पर प्रभाव बढ़ता गया| जहाँगीर मांस-मदिरा, व्यसन तथा भोग विलास में इतना आसक्त हो गया कि उसे अपने साम्राज्य के शासन की जरा भी परवाह नहीं रही|

अन्ततः नूरजहाँ मुगल साम्राज्य को अपने हिसाब से चलाने लगी| कुछ इतिहासकारों का मानना है कि नूरजहाँ ने जहाँगीर की कमजोरियों का भरपूर फायदा उठाया तथा राजकाज की समस्त जिम्मेदारी अपने हाथों में ले लिया| उसके प्रतिद्वन्दियों का कहना था कि नूरजहाँ अपने दरबार में ईरानी शासकों को ही रखती है, क्योंकि वह भी ईरान की ही है| आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी अपनी कहानी 'सोया हुआ शहर' में दिखाना चाहतें हैं कि नूरजहाँ अपने शासन का सारा काम-काज स्वयं देखती थी| “असल बादशाह तो नूरजहाँ मलिका थी, जिसने अपने रूप, यौवन, चतुराई खुशमिजाजी और बुद्धि वैभव से बादशाह और बादशाह के साम्राज्य पर भी अपना अधिकार कर रखा था| मुगल साम्राज्य का कोई दरबारी अमीर नूरजहाँ की कृपा दृष्टि पाए बिना सल्तनत में अपनी प्रतिष्ठा कायम नहीं रख सकता था| बादशाह के पुत्र भी इसका अपवाद न थे| इस कारण मुगल राजधानी षड्यंत्र का एक गर्मा गर्म केन्द्र बन गई थी ये षड्यंत्र बादशाह के भी विरूद्ध होते थे और बेगम नूरजहाँ के भी विरूद्ध|”[13]

नूरजहाँ में भले ही अनेक कमियां रही हों लेकिन उसके साथ-साथ उसमें अनेक प्रकार की अच्छाइयां भी थीं| वह जहाँगीर के अधिकतर कार्यों में हाथ बंटाती थी| वह जिस तरह से कार्य करती थी, उस तरह से कार्य करना हर स्त्री के वश की बात नहीं थी| वह एक अच्छी घुड़सवार तथा पक्की निशाने बाज थी| वह शिकार भी खेलने के लिये जहाँगीर के साथ जाती थी| वह अनेक गुणों से युक्त होने के साथ-साथ अत्यंत सुन्दर और

बुद्धिमान भी थी| जिस औरत या नारी में इतने सारे गुण भरे हों भला उसका पति क्यों न उसके वश में रहेगा| इन तमाम बातों तथा कुशल राजनीति के द्वारा ही उसने अपने पति जहाँगीर को अपने वश में किया था| नूरजहाँ के व्यक्तित्व के बारे में सतीश चन्द्र अपनी पुस्तक 'मध्यकालीन भारत' में लिखते हैं कि "नूरजहाँ जहाँगीर की स्थायी संगिनी थी तथा शिकार पर भी उसके साथ जाती थी, क्योंकि वह एक अच्छी घुड़सवार और पक्की निशाने बाज थी इसलिए वह जहाँगीर को प्रभावित कर सकती थी तथा बादशाह से अपनी सिफारिश कराने के लिए अनेक व्यक्ति उससे संपर्क करते थे| मुगल शासन काल में पहले कोई स्त्री इतनी महत्वपूर्ण स्थिति तक नहीं पहुंची थी|"[14]

इस तरह से शास्त्री जी ने प्रस्तुत कहानियों में ऐतिहासिक स्त्री पात्रों के द्वारा भारतीय संस्कृति, सभ्यता, रीति- रिवाज एवं तत्कालीन परंपराओं पर प्रकाश डाला है। ये स्त्रियां अपनी परम वीरता और साहस के बल पर अपने देश की सुरक्षा एवं अपना कुशल शासन चलाना अच्छी तरह से जानती हैं।

अर्ध ऐतिहासिक पात्र :-

आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी ने ऐतिहासिक कहानियों के साथ-साथ कुछ अर्द्ध ऐतिहासिक कहानियों का भी वर्णन किया है| इन कहानियों का उद्देश्य समाज में समानता, शिक्षा, सदव्यवहार तथा भाई-चारे की भावना को बढ़ावा देना भी प्रतीत होता है| इनकी कहानियों के तथ्य इतने रोचक व हृदयग्राही होते हैं कि पाठक अपने आपको रोक नहीं पाता| एक बार शुरूआत करने के पश्चात पूरी कहानी को पढ़े बिना नहीं रह पाता है| इनकी कुछ अर्ध- ऐतिहासिक कहानियों के स्त्री पात्रों का वर्णन किया जा रहा है|

1- दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी-

इस कहानी में मुगल सम्राट शाहजहाँ और उनकी नवविवाहिता बेगम सलीमा का चरित्रांकन किया गया है| सलीमा और शाहजहाँ दोनों शादी के पश्चात सल्तनत के कार्यों से मुक्त होकर, प्रेम पूर्वक आनंदित जीवन व्यतीत करने के लिए कश्मीर के दौलत खाने में जाते हैं| वहाँ पर उनके रहन-सहन, खान-पान, प्रकृति वातावरण, नियम- व्यवस्था इत्यादि का मनोरंजक एवं मार्मिक वर्णन दिखाई पड़ता है| प्रस्तुत कहानी में स्त्री पात्रों के रूप में सलीमा तथा उसकी एक दासी का वर्णन मिलता है|

सलीमा-

इस कहानी में सलीमा और शाहजहाँ की प्रणय वेदना को दिखाया गया है| बेगम सलीमा शाहजहाँ के साथ कश्मीर के दौलत खाने में विहार करने के उद्देश्य से जाती हैं। वहाँ की अनुपम छटा उनको मनमोहित करती है| गर्मी का समय और फाल्गुन का महीना था| शादी के पश्चात सलीमा और शाहजहाँ दोनों कश्मीर की घाटियों में पहुंचे थे| मोती महल के कमरे में एक शमादान अपना सुवर्ण प्रकाश भर रहा था और खिड़की के समीप ही बैठी सलीमा रात के सौन्दर्य को निहार रही थी| उसका सुंदर शरीर उस अंधेरी रात में संगमरमर की भांति चमक रहा था| उसके गले में मोतियों की माला अत्यंत शोभायमान हो रही थी| पूरे कमरे को सुगन्धित फूलों और अन्य सजावट की वस्तुओं से सजाया गया था।

उस दिन सम्राट शाहजहाँ शिकार के लिये गये थे और देर रात तक वापस नहीं लौटे| उन्हीं की याद में खोयी हुई रात के सौन्दर्यमयी चाँदनी की अनुपम छटा को देख-देखकर सलीमा प्रफुल्लित हो रही थी| सलीमा के साथ उसकी एक दासी (साकी) भी साथ में थी जो उसके हर सुख-दुख का बराबर ध्यान रखती थी और बड़ी जी जान से उसकी सेवा में लगी रहती थी| जब आधी रात बीत गई और शाहजहाँ नहीं वापस आये तो सलीमा थोड़ी बेचैनी-सी महसूस करने लगी, जो कि स्वाभाविक ही था। अतः वह अपनी दासी (साकी) से कहती है कि “साकी, तुझे बीन अच्छी लगती है या बांसुरी?

बांदी ने नम्रता से कहा-हुजूर जिसमें खुश हों|

सलीमा ने कहा- पर तू किसमें खुश है?

बांदी ने कम्पित स्वर में कहा-सरकार बांदियों की ख़ुशी ही क्या!

सलीमा हंसते-हंसते लोट गई| बांदी ने वंशी लेकर कहा क्या सुनाऊँ ?"[15]

सलीमा कहती है कि साकी आज तू मुझे कुछ गा के सुना| आज मेरा मन मदहोश होता जा रहा है| मैं अपने वश में नहीं हूँ, मेरा मिजाज आज शायराना होने के लिए बेताब है| कमरा बहुत ज्यादा गर्म मालूम होता है थोड़ी हवा आने के लिए पहले इसके दरवाजे, खिड़की और परदे खोल दे, तब फिर कुछ गाकर सुना| साकी ने एक गिलास शर्बत बनाकर उसमें इस्तम्बोल मिलाकर पीने के लिए उसे दे दिया| सलीमा ने उसे एक ही बार में पी लिया और फिर साकी से कहती है कि "अब सुनो| तूने कहा था कि तू मुझे प्यार करती है, सुना कोई प्यार का ही गाना| इतना कह और गिलास को गलीचे पर लुढ़काकर मदमाती सलीमा उस कोमल मखमली मसनद पर खुद ही लुढ़क गई और रस भरे नेत्रों से साकी की ओर देखने लगी| साकी ने वंशी का सुर मिलाकर गाना शुरू किया- दुःखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी..|"[16]

जब सलीमा बेसुध हो गई तो वह बांदी मौके का फायदा उठाकर उसके होठों को चूम लेती है| तभी अचानक शाहजहाँ शिकार पर से वापस आ जाते हैं तथा उसे चूमते हुए देख लेते हैं| वह अत्यंत क्रोधित होकर साकी से कहते हैं कि तुम कौन हो और ये क्या कर रही थी। तब साकी

डर के मारे कांपने लगती है| शाहजहाँ ने जब कई बार डराकर पूछा तो साकी सहमी हुई उत्तर देती है कि मैं मर्द हूँ! यह सुनकर शाहजहाँ के होश उड़ जाते हैं और कहते हैं कि तुम मर्द हो तो तुम्हारी कैसे हिम्मत पड़ी यहाँ रहने की| तुम्हें मैं बड़ी से बड़ी सजा दूँगा| इतना कहकर वह उसे कैदखाने में डलवा देते हैं और सलीमा को भी आदेशित करते हैं कि उसे कमरे के बाहर न निकलने दिया जाय| सलीमा को जब नशा उतरने के बाद होश आया तब उसे सारी बातों का पता चलता है और वह सहम जाती है| तब उसे बड़ी चिंता होती है कि उसे उस चीज की सजा मिल रही है जो उसने कभी किया ही नहीं था| सलीमा भी सम्राट शाहजहाँ के पास संदेश भिजवाती हैं कि वह निर्दोष है, उसे भी यह नहीं मालूम था कि उसके साथ में रहने वाली दासी एक मर्द है| अतः मुझे अनजान समझकर माफ कर दिया जाय| परन्तु शाहजहाँ ने उसकी एक न सुनी| अन्त में निराश होकर सलीमा अपनी जीवन लीला को समाप्त करने का मन बनाती है।

एक दिन पुनः अपने पति शाहजहाँ को एक पत्र लिखकर भिजवाती है जिसमें लिखा था कि "दुनिया के मालिक! आपकी बीबी और कनीज होने की वजह से मैं आपके हुक्म को मानकर मरती हूँ| इतनी बेईज्जती पाकर एक मलिका का मरना ही मुनासिब है। मगर इतने बड़े बादशाह को औरतों को इस कदर नाचीज तो न समझना चाहिए कि एक अदना-सी बेवकूफी की इतनी कड़ी सजा दी जाये| मेरा कसूर सिर्फ इतना ही था कि

मैं बेखबर सो गई थी| खैर सिर्फ एक बार हुज़ूर को देखने की ख्वाहिश लेकर मरती हूँ| मैं उस पाक परवर दिगार के पास जाकर अर्ज करुँगी कि वह मेंरे शौहर को सलामत रखे|"[17]

इतना लिखने के पश्चात वह खत राजा साहब के पास भिजवा देती है परन्तु इसके बावजूद भी क्रोधित शाहजहाँ उससे मिलना मुनासिब नहीं समझते| यह जानकर सलीमा अन्दर ही अन्दर इतना टूट जाती है कि उसकी सारी इच्छाएं तत्काल समाप्त हो जाती हैं और वह अपने कलेजे पर पत्थर रखकर मृत्यु को वरण करने का प्रयास करती है। तत्पश्चात उठकर झटपट हीरे की एक अंगूठी चाट लेती है तथा मृत्यु की प्राप्ति के लिए तड़पने लगती है| यह खबर सुनकर शाहजहाँ के पैरों तले जमीन खिसक जाती है और वह बदहवास से दौड़े, जैसे महाभारत में श्री कृष्ण सुदामा को अपने दरवाजे पर आये सुनकर नंगे पांव तथा पागलों की भांति तत्क्षण मिलने के लिए भाग पड़े थे, ठीक उसी प्रकार से शाहजहाँ भी जब सलीमा की इस स्थिति की खबर पाते हैं तो वह उल्टे पांव उसके पास भाग पड़े| आकर देखते हैं कि वह जमीन पर पड़ी हुई है| उसकी आंखें ललाट पर चढ़ गई हैं और उसका रंग कोयले की तरह काला हो गया है| यह सब शाहजहाँ से देखा न गया और हकीम को बुलाने के लिये सैनिकों को आदेशित किया| यह शब्द सुनकर सलीमा धीरज बांधकर कराहते हुए धीमे स्वर में बोली "हुजूर मेरा कुसूर बहुत मामूली था| बादशाह ने कड़े स्वर में कहा बदनसीब! शाही जनानखाने में मर्द को भेष

बदलकर रखना मामूली कुसूर समझती है? कानों पर यकीन भी न करता, मगर आँखों देखी को भी झूठ मान लूं? तड़प कर सलीमा ने कहा- क्या?”[18]

फिर बादशाह ने उसे बताया कि तुमने अपने साथ एक दासी के रूप में एक मर्द (बांदी) को रखा, क्या यह अपराध नहीं| सलीमा को भी यह बात पता न थी| यह जानकर बादशाह को बड़ी ग्लानि हुई और वे अपने द्वारा किये गये इस मूर्खतापूर्ण कार्य हेतु पश्चात्ताप की अग्नि में झुलसने लगे| इधर सलीमा अपनी जीवन लीला समाप्त करके आंखें बंद कर चुकी थी| बादशाह ने अपने घुटनों के सहारे बैठकर उसके ललाट को चूमा और एक नादान बच्चे की तरह रोने लगे|

बांदी (दासी)-

यह सलीमा की दासी थी जो सलीमा के साथ ही रहती थी तथा उसकी हर प्रकार से सेवा करती थी| वास्तव में वह दासी के रूप में एक स्त्री न होकर एक मर्द था| सलीमा को वह बचपन से ही प्यार करता था। उसके बगैर उसे दुनियां के सारे सुख, धन-वैभव सब कुछ फीके से लगते थे| वह उससे इतनी मोहब्बत करता था कि उसके लिये एक स्त्री का रूप धारण कर उसके साथ उसकी दासी बनकर रहने लगा था| वह सलीमा को हमेशा अपनी आँखों के सामने देखना चाहता था परन्तु समय के साथ-

साथ परिस्थितियां भी बदल जाती हैं| जब सलीमा थोड़ा बड़ी हो गई तो वह पर्दे में रहने लगी थी। कुछ दिनों के बाद उसकी शादी हो जाती है।

वह बांदी उसके साथ उसकी ससुराल में भी एक दासी के रूप में रहने लगती है| उस दिन जब सलीमा बेसुध पड़ी थी, तब उसने मौका पाकर उसके मधुमय होठों को चूम लिया| तत्पश्चात शाहजहाँ शिकार से वापस आ जाते हैं और यह हरकत करते हुए अपनी आँखों से देख लेते हैं। यह दृश्य देखकर उनके हृदय में बहुत कष्ट होता है| उसे उसकी उस करतूत के कारण कैदखाने में डलवा देते हैं| सलीमा की मृत्यु के पश्चात वे एक दिन कैदखाने में उस बांदी के पास जाते हैं और उससे इसकी पूरी कहानी पूछते हैं| शाहजहाँ के बार-बार कहने और धमकाने पर वह मर्द सच-सच बताते हुए शाहजहाँ से पूरी कहानी को इस प्रकार से बयां करता है कि “सिर्फ सलीमा को झूठी बदनामी से बचाने के लिए कैफियत देता हूँ, सुनिए सलीमा जब बच्ची थी, मैं उसके बाप का नौकर था| तभी से मैं उसे प्यार करता था| उम्र होने पर सलीमा पर्दे में रहने लगी और फिर वह शाहजहाँ की बेगम हुई| मगर मैं उसे भूल न सका| पांच साल तक पागल की तरह भटकता रहा, अन्त में भेष बदलकर बांदी की नौकरी कर ली| सिर्फ उसे देखते रहने और खिदमत करके दिन गुजारने का इरादा था|”[19]

कुछ इस प्रकार से उस बांदी ने शाहजहाँ को सारी बात क्रमवार बताई| उसने यह भी बताया कि मैंने सलीमा को अपनी नजरों के सामने सिर्फ देखते रहने के उद्देश्य से बांदी की नौकरी कर लिया था परन्तु मेरा

कोई गलत इरादा नहीं था| उस दिन जब वह उज्ज्वल चाँदनी, सुगन्धित पुष्पों से सजे हुए कमरे में शराब की उत्तेजना से मदमस्त हो गई और उसके पास कोई नहीं था, तब मैं लाख चाहते हुए भी खुद को रोक नहीं पाया। आंचल से उसके मुख का पसीना पोंछते हुए मैंने उसके मुख को चूम लिया| यह सच्चाई सुनकर शाहजहाँ के मुख से आवाज ही न निकली और वे चुपचाप वहाँ से बिना उस कैदखाने का दरवाजा बन्द कराए चले गये|

इस तरह कहानी में कुछ ऐतिहासिक तथा कुछ काल्पनिक पात्रों तथा घटनाओं का सहारा लेकर आचार्य जी ने अपनी कहानी को सफल एवं रसपूर्ण बनाने का प्रयास किया|

2- लाला रुख-

प्रस्तुत कहानी एक मुगल कालीन कहानी है। इस कहानी में लाला रुख को बादशाह आलमगीर की प्यारी, दुलारी, फूलों जैसे सुकुमारी एवं एक शहजादी के रूप में वर्णित किया गया है| इस कहानी के स्त्री पात्रों में केवल लाला रुख और उसकी कुछ सहेलियों का चरित्रांकन किया गया है| लालारूख अत्यंत सुकोमल, सुंदर और दन्तुरित मुस्कान वाली आलमगीर की पुत्री थी| आलमगीर उस समय दिल्ली का बादशाह था तथा अपनी पुत्री लाला रुख का ब्याह बुखारे के शहजादे इब्राहिम के साथ तय कर दिया था| लाला रुख का सौन्दर्य इतना आकर्षक और सुन्दर था कि कोई

भी उसे देखकर उसका दीवाना हो जाता था| एक बार बुखारे के शहजादे ने शहजादी का इस्तकबाल करने के लिये कश्मीर के दौलत खाने में इजाजत मांगी| आलमगीर ने इस पर अपनी सहमति जताई| फिर क्या था दिल्ली से शहजादी की सवारी निकालने की तैयारियां शुरू हो गई| जिस रास्ते से सवारी निकालनी थी, उस पर तरह-तरह के फूलों, गुलाबों और केवड़ों के अर्क का छिड़काव भी सुसंगत तरीके से किया गया था| जौहरियों और सुनारों ने सोने-चांदी के जेवरों और जवाहरात से अपनी दुकान के बाहरी हिस्से को खूब सजाया-संवारा था|

जिस समय लाला रुख की सवारी दिल्ली से कश्मीर के दौलताबाद के लिये निकली, उस समय नगर के सभी लोग शहजादी को एक नजर देखने के लिये अपने घरों, दुकानों, छतों इत्यादि जगह पर महिलाएं, पुरुष, बच्चे सभी निगाह गड़ाए हुए थे| लाला रुख की सवारी बड़े बन्दोबस्त के साथ धीरे- धीरे आगे बढ़ रही थी| आगे और पीछे सैनिक नंगी तलवार लिये बड़े जोश के साथ चल रहे थे| रास्ते के सभी दृश्य खेत, खलिहान, पहाड़ी शहरों की ऊंची-ऊंची इमारतों, सुन्दर फूलों से सुगन्धित बगीचे, नदी, तालाबों, झरनों, उन्मुक्त पक्षियों की चहचहाहट, मधुर ध्वनि, कलरव इत्यादि सभी को शहजादी अपने हांथों से पर्दे हटाकर, झांकते हुए आनन्दित हो रही थी| कहीं-कहीं विश्राम के लिये हर दस कोस पर पड़ाव पड़ता था| एक दिन जब वह पड़ाव पर प्राकृतिक दृश्यों नदी, तालाबों, झरनों, रंग-बिरंगे फूल-पत्तियों के सुन्दर और आकर्षक

मनमोहक छवि को देखकर प्रफुल्लित और मंत्रमुग्ध हो रही थी, तभी उसे समाचार मिला कि बुखारे के शहजादे ने उसकी सेवा मनोरंजन के लिये इब्राहिम नामक एक कवि और शायर को उसके खिदमत में भेजा है और यह भी कहा है कि शहजादी उस व्यक्ति से पर्दा भी न करें| "कहीं बदली छा रही थी, कश्मीर की घाटियों में लाला रुख की छावनी पड़ी थी| चारों तरफ सुहावने दृश्य थे| दूर पर्वत श्रेणियां शोभा बिखेर रहीं थीं| चांदनी छिटकी थी और बदली में छन-छन कर धरती पर वीणा-विनिन्दित स्वर में मस्ताना गीत गा रहा है| उस प्रशांत रात्रि में उस सुमधुर गायन और उसके प्रेम भावना पूर्ण शब्दों से लाला रुख प्रभावित हो गई| उसने प्रधान दासी को बुलाकर कहा-कौन गा रहा है?

वह कश्मीरी कवि है|

बड़ा प्यारा गीत है?

और वह गायक उससे भी ज्यादा प्यारा है|"[20]

उस मधुर गीत को सुनकर लाला रुख सोचती है कि जो इतना सुन्दर गाता हो, उसका कंठ इतना अच्छा हो तो वह कितना सुन्दर होगा| उसे देखने की बार-बार इच्छा होने से शहजादी उसे बुलाती है और देखकर उससे प्रेम कर लेती है| उसकी सवारी धीरे-धीरे कश्मीर के निकट पहुँचने वाली थी पर वह इब्राहिम को रास्ते में ही अपना दिल दे बैठती है। अब उसका कश्मीर के दौलत खाने में बुखारे के शहजादे के पास जाने का मन ही नहीं करता है| अन्ततः थक हार कर किसी तरह हिम्मत

करके वह शहजादे के पास पहुंचती है, यह सोचकर कि रास्ते की सारी बातें वह उनसे कह देगी| जब उसकी सवारी वहाँ पहुँचती है तो वह देखती है कि "शहजादा जड़ाऊ तख्त पर बैठा शहजादी के स्वागत की प्रतीक्षा कर रहा था| उसके बगल में एक दूसरा जड़ाऊ तख्त शहजादी के लिये पड़ा था| शहजादी ने ज्यों ही हवादान से पैर निकाला, शहजादा उसे देखकर अवाक रह गया| बिखरे बाल,मलिन वेष, सूखा और पीला चेहरा तथा सूजी हुई आंखें, शहजादी ने आंख उठाकर भी शहजादे को नहीं देखा| वह आगे बढ़कर तख्त के नीचे जमीन पर लोट गई| उसने शहजादे के पैर पकड़कर कहा- क्षमा, क्षमा ओ उदार शहजादे क्षमा|"[21]

लाला रुख बिना शहजादे की ओर उनसे अपने प्यार के लिये इब्राहिम से क्षमा मांगती है और कहती है कि मुझे इब्राहिम को अपनाने का अधिकार दे दिया जाये| इतना सब कहने के बाद जब वह सामने देखती है तो उसके पाँव तले जमीन खिसक जाती है| उसे आश्चर्य होता है कि वह जिसके लिए लाख मिन्नतें, विनती, आरजू कर रही थी, वह शहजादा ही इब्राहिम निकला| उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो पा रहा था पर इब्राहिम को देखकर उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा और वह इतनी अधिक खुश हो गई कि उनकी गोद में ही बेहोश होकर लुढ़क गई|

प्रस्तुत कहानी में आचार्य जी ने ऐतिहासिक पात्रों और स्थानों को मिलाकर इस कहानी को सुन्दर तरीके से वर्णित करने का भरपूर प्रयास किया है जिसमें वह सफल भी हुए हैं| प्रेम के आगे सब कुछ फीका पड़

जाता है। प्रेम सर्वोपरि है ऐसा इस कहानी के माध्यम से सन्देश मिलता है|

काल्पनिक पात्र -:

आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी ने ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा मुगलकालीन कहानियों के साथ-साथ काल्पनिक कहानियों की भी रचना बहुतायत में की है| कहानियों के माध्यम से एक कहानीकार समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास करता है| कहानियां पढ़ना किसको अच्छा नहीं लगता है अर्थात् सभी लोग कहानियां सुनना, पढ़ना पसंद करते हैं| कहानियां एक उचित मार्गदर्शन हेतु लोगों की विचारधारा को पल्लवित व पोषित करने का एक सशक्त माध्यम हैं| यहां पर हम आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी की कुछ काल्पनिक कहानियों के स्त्री पात्रों का वर्णन करेगें|

1- मैं तुम्हारी आँखों को नहीं, तुम्हें चाहता हूँ-

यह एक कहानी अत्यंत ही मार्मिक कहानी है जो लोगों के दिलों को अन्दर से झकझोर देती है| प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने बंशी और रम्भा के प्रेम सौन्दर्य का चरित्रांकन किया है। इसके माध्यम से कहानीकार ने पाठक को यह संदेश देने का प्रयास किया है कि हमें कभी भी किसी के प्रति धोखा, चालाकी या ईर्ष्या का भाव नहीं रखना चाहिए| हम इस जीवन में जैसा कर्म करते हैं, वैसा ही फल हमें मिलता है| यदि हम दूसरों के लिये कांटा बोने का काम करते हैं तो हमें कभी भी फूलो

की कल्पना नहीं करनी चाहिये, क्योंकि हम जैसा दूसरों के बारे में सोचतेऔर करते हैं, उसी प्रकार से भगवान हमें इसका फल भी देता है|

रम्भा-

प्रस्तुत कहानी की स्त्री पात्र रम्भा है जिसने बंशी के बचपन के प्रेम को, जवानी में चंद पैसों और ऐशो-आराम की जिन्दगी के मोह में छोड़ दिया| बंशी बेचारा अपनी प्रेमिका की याद में फूट-फूटकर, एक-एक पल का समय, एक-एक साल के बराबर काटने पर मजबूर हो जाता है| उधर उसकी प्रेमिका रम्भा एक नाटक मंडली में सम्मिलित होकर बहुत बड़ी कलाकार तथा नृत्य प्रदर्शन में महारथ हासिल कर लेती है। बड़े-बड़े लोगों के साथ उसका उठना-बैठना हो जाता है| इधर बंशी उसके वियोग में अपनी भेड़ों को चराता हुआ अपनी जिंदगी की गाड़ी के पहिये को किसी प्रकार से खीचता हुआ चला रहा था। बंशी अपनी विधवा माँ का एक मात्र सहारा होने कारण अपनी मां का भी बराबर ख्याल रखता है| वह दिन भर भेड़ों के साथ तो रहता है, परन्तु उसका दिलो-दिमाग हर घड़ी उसी रम्भा की चाहत में खोया रहता है| वह चाहकर भी उसे भुला नहीं पाता है| एक बार बहुत श्रम करके वह रम्भा से मिलने के लिये उसके पास जाता है लेकिन रम्भा उसकी गरीबी और उसके फटे मैले कपड़ों को देखकर उससे न मिलना ही उचित समझती है। अंततः वह उससे मिलने से इंकार कर देती है| बेचारा बंशी खुद को वहाँ पर ठगा सा महसूस करता है और पुनः अपने घर की तरफ रवाना हो जाता है|

रम्भा का नया प्रेमी जो कि गुब्बारे को हवा में उड़ाता था तथा गुब्बारे में लोगों को बैठाकर,गुब्बारे के साथ-साथ आसमान में सैर भी कराता था| रम्भा एक बार उसके साथ गुब्बारे में बैठकर सैर करने के लिये निवेदन करती है| उसका प्रेमी उसे गुब्बारे में बिठाकर आसमान की काफी ऊंचाई तक उसे सैर कराने के लिये ले जाता है| वह कई नदियों, कई पहाड़ों, कई झीलों, बाग-बगीचों इत्यादि की सैर करता रहा परन्तु होनी को शायद कुछ और ही मंजूर था| अचानक जोर-जोर से बिजली के चमकने तथा भारी वर्षा के आगमन का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ| गुब्बारों को नीचे उतारने से पहले ही बड़ी जोर से बिजली कड़की और गुब्बारा फट गया, उन दोनों की हालत क्या हुई होगी यह तो अनुमान लगाया ही जा सकता है- “दोनो प्रेमी बीच आकाश में जी खोलकर, हृदय से हृदय की तंत्री बजा रहे थे कि बादल की गड़गड़ाहट सुनाई दी| धीरे-धीरे वर्षा के सब आसार दिखने लगे तथा बिजली चमकने लगी| अपने चरों ओर यह उपद्रव देखकर दोनों प्रेमी थर-थर कांपने लगे| बिजली की कड़क और भी ज्यादा तेज और पास सुनाई देने लगी| हक्का-बक्का हो दोनों देखने लगे कि एक बिजली की तड़प आई और उसने गुब्बारे को बरबाद कर दिया| फटते ही गुब्बारा नीचे गिरा| उसमें आग लग गई और दोनों झुलस कर बेहोश गये|”[22]

इस घटना के बाद लोगों ने किसी तरह उन दोनों को ले जाकर अस्पताल में भर्ती कराया| बाद में जब दोनों को होश आता है। वह युवक

धीरे- धीरे पूरी तरह स्वस्थ हो गया परन्तु इस हादसे में रम्भा ने अपनी दोनों आंखें गंवा दी| वह बेचारी हमेशा के लिये अंधी हो गयी| वह फूट-फूटकर करुण विलाप करने लगी और जोर-जोर से अपना माथा पीट-पीटकर रोने लगी| जब उस युवक को पता चला कि रम्भा हमेशा के लिये अन्धी हो चुकी है तो वह झूठी हमदर्दी दिखाकर वहां से चम्पत हो जाता है| अब रम्भा की देखभाल करने वाला कोई नहीं बचा था| उसकी विधवा मां थी जो पहले ही इस संसार से विदा हो गई थी| अन्ततः उसे जब कोई सहारा न मिलते दिखा तो उसे एक बार पुनः बंशी की याद आयी। रम्भा उसके पास किसी से एक खत लिखवाकर भिजवाती है| उस चिट्ठी में लिखा था कि "तुम अपनी बालसखी रम्भा को न भूले होगे| वही अब बड़े संकट में है| तुम उस अभागिनी के अपराधों को भूल सको तो एक बार उससे मिलकर उसकी सन्तप्तव्यापी आत्मा को तृप्त कर दो|

तुम्हारी अपराधिनी

रम्भा|"[23]

यह चिट्ठी जब बंशी के घर पर पहुंची तो उस समय बंशी जंगल में अपनी भेड़ों को चरा रहा था। चिठ्ठी उसकी माँ को मिली। मां ने जब चिट्ठी पढ़ी तो उसे बड़ी खुशी हुई कि मेरे बेटे को उसकी पुरानी दोस्त मिल जायेगी, जिसके लिये उसका बेटा रात-दिन चिंता में ही खोया रहता है| माँ तुरन्त एक दुशाला ओढ़कर उस रम्भा के पास पहुंचती है। रम्भा अपनी करुणा भरी कहानी मां को सुनाती है। माँ यह सब सुनकर उसे

अपने घर पर ले आती है | जब बंशी को पता चला कि यह वही रम्भा है जिसने कभी मुझे दुत्कार दिया था। आज वह स्वयं मेरे पास चलकर आयी है तो वह अत्यंत खुश हो जाता है परन्तु जब उसकी मां उसे बताती है कि रम्भा की तकदीर खोटी है तब बंशी बहुत परेशान होकर मां से कहता है कि तकदीर खोटी है का क्या मतलब, मुझे साफ-साफ बताओ| “बूढ़ी मां की आँखों में पानी भर आया| भर्राए गले से उसने कहा- वह बरामदे में बैठी है| उसकी आखें राम ने छीन ली हैं| बंशी अकचका गया रम्भा की आँखें! रम्भा अन्धी हो गई क्या? मां तुम क्या कह रही हो? धीरे-धीरे बूढ़ी ने सारी कथा, जो रम्भा से सुनी थी, कह सुनाई| बंशी का कलेजा फटने लगा| उसका जी भर आया| उसके मुख से बात नहीं निकली, केवल उसकी आँखों से झर-झर पानी बरसने लगा, कुछ कहने की इच्छा हुई, पर बोल न सका|”[24]

सब कुछ जानने के पश्चात बंशी का ह्रदय पिघल जाता है, क्योंकि आज भी उसे रम्भा की उतनी ही जरूरत थी जितनी कि कभी पहले| उसे वह माफ कर देता है और उससे अपने प्रणय-प्रेम का निवेदन करता है| रम्भा जिसे सहर्ष स्वीकार कर लेती है और वह अपने प्रेम को बंशी से स्वीकार करने के लिये कहती है| बंशी मुस्कुराकर कहता है कि पगली, मैं तुम्हारी आँखों को नहीं तुम्हें चाहता हूँ। मैंने तुम्हारी आत्मा से प्यार किया है| तुम्हारी आँखें हो या न हो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता| मैं विवाह करूँगा तो सिर्फ तुम्हीं से ही करूँगा| यह सुनकर रम्भा अन्दर ही अन्दर

बहुत खुश हो जाती है| उसे इसके पहले अपनी करनी पर बड़ा पछतावा हो रहा था कि पता नहीं मेरा अपराध क्षमा योग्य है भी या नहीं परन्तु उसे अब अहसास हो रहा था कि उसे बंशी के रूप में मनुष्य नहीं, देवता मिला था जिसे वह दौलत और ऊंचे शौक के नशे में पहचान न सकी| वह उसके अंतर्मन को न समझ पायी और उसे ठोकर मारकर नये प्रेमी के साथ चली गयी थी वन-बिहार करने। आज भले ही उसकी आंखें नहीं हैं परन्तु उसकी आँखों से उस दौलत की बू वाली काली पट्टी भी निकल गयी है| अब उसे सही या गलत की पहचान करने में जरा सी भी कठिनाई नहीं होगी| रम्भा और बंशी दोनों का शुभ घड़ी में विवाह हो जाता है और दोनो एक दूसरे से सात जन्मों तक अलग न होने की प्रतिज्ञा करते हैं|

2- नवाब ननकू:

प्रस्तत कहानी में आचार्य जी ने एक ऐसे राजा की कहानी को आधार बनाया है जो अत्यंत ही विलासी, शराबी-कवाबी तथा रसिया था परन्तु इन सब दुर्गुणों के बावजूद राजा के अन्दर मानवता, दान, दया, परोपकार, किसी का अहित न होने देना जैसे गुण भी मौजूद दिखाई पड़ते हैं| वे अपने राजदरबार के नौकरों तथा बांदियों को खूब धन-दौलत देकर माला-माल करते थे| कुछ समय पश्चात जल्द ही ऐसा समय आ जाता है कि उनकी सारी सम्पत्ति खत्म होने के कगार पर पहुँच जाती है| धीरे-धीरे

सारे सैनिक और नौकर चाकर उनके इस वेश्यावृत्ति और दारिद्र्य से परेशान होकर उनका साथ छोड़ देते हैं, लेकिन फिर भी दो नौकर और उनका बेटा तथा उनका छोटा भाई उनका साथ कभी नहीं छोड़ते| राजा ने जिस वेश्या से प्रेम किया था, वह आज भी राजा साहब के लिये अपना सब कुछ न्योछावर करने को हर क्षण तैयार रहती थी| इस कहानी में स्त्री पात्रों में केवल एक ही स्त्री पात्र राजेश्वरी है जो राजा की पहले बांदी थी, किन्तु बाद में राजा ने उससे विवाह कर लिया था और काफी धन-दौलत से उसे नवाज कर अमीर बना दिया था|

राजेश्वरी-

राजेश्वरी एक वेश्या के रूप में उभरकर सामने आती है। यह पहले राजा की एक सेविका थी। राजा उससे धीरे- धीरे प्रेम करने लगे थे| राजा उसकी सुन्दरता पर इतना अधिक आसक्त हो गए थे कि अपनी पूरी जायदाद उस पर लुटाना अनुचित न समझा| राजा तो स्वभाव से दानी थे ही वह किसी को कभी निराश नहीं करते थे, पर आज वह उम्र के इस पड़ाव पर थे कि बिना सहारे के उठना-बैठना भी कठिन लगता था| आज उनकी हालत पहले से बहुत ही बदतर हो गई थी| शराब-कवाब तथा वेश्यावृत्ति की आदत उनकी अभी तक न गई थी जैसा कि एक कहावत कही जाती है कि ‘रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई’ वही हाल आज राजा का था| राजा का महल भी बिक गया था पर उनकी वेश्यावृत्ति से मोह

नहीं छूटा था।| राजा के पास अब खुद का घर भी नहीं बचा था| किराए का घर लेकर राजा साहब रहते थे| उनका साथ देने के लिए उनका छोटा भाई नवाब ननकू, बेटा- कुंवर साहब, एक नौकर रामधन, और राजेश्वरी ही बचे थे| आज उनकी स्थिति से वाकिफ होने के बाद राजेश्वरी उनसे मिलने के लिये पधारी थी परन्तु राजा के पास उसके स्वागत के लिये कुछ नहीं है| नवाब ननकू अपनी कुशाग्र बुद्धि का प्रयोग करते हुए किसी प्रकार से 40 रु. का बन्दोबस्त करता है। सभी प्रकार की व्यवस्था को ठीक करता है| राजेश्वरी जब महल में पहुँचती है तो राजा साहब की इस स्थिति को देखकर अत्यंत ही सोच में पड़ जाती है| वह राजा साहब की ऐसी दशा देखकर अन्दर ही अन्दर रोने लगती है। वह उनकी मदद तो करना चाहती थी पर राजा किसी से एक पैसा भी न लेते थे|

3- विश्वास पर विश्वास-

इस कहानी में नारी पात्र के रूप में नन्दू की पत्नी मैंना ही मुख्य रूप से उभरकर सामने आती है। मैना अपने पति के साथ एक झोंपड़ी में पशुवत जीवन जीने को मजबूर थी| वह चाहती तो उसे छोड़कर और कहीं चली जाती मगर मैना ने ऐसा नहीं किया, क्योंकि वह एक भारतीय महिला थी, जिसने अपने पति के भरोसे को कायम रखने का भरपूर प्रयास किया| उसका पति 50 वर्ष की उम्र पार कर चुका था जबकि मैना की उम्र मात्र 25 वर्ष की थी| अपने उम्र से दोगुने उम्र वाले इंसान के साथ वह हंसी-ख़ुशी रह लेती परन्तु वह कई दिनों तक न तो स्नान करता था, न ही अपने शरीर की साफ सफाई करता था| वह एक जंगली जानवर की तरह जंगल की उस एकांत झोपड़ी में रहता था| उसका प्रमुख कार्य चोरी, डकैती, छीना-झपटी इत्यादि थे| उसके पीछे पुलिस हमेशा उसकी तलाश में लगी रहती थी। वह उनको चकमा देकर हमेशा बचता चला आ रहा था, लेकिन जैसा कि एक कहावत प्रचलित है कि बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी? वही हाल इसका भी हुआ| एक दिन जब सिपाही रामसिंह उसके घर आया तो उसकी पत्नी मैना (जो कि मन ही मन उसको पसंद करती थी, क्योंकि उसने एक बार उसकी एक सिंह से रक्षा की थी|) ने अपने पति के द्वारा चोरी किये हुए सारे माल का पता उसे बता देती है परन्तु वह सिपाही रामसिंह उसका सारा माल उसे पुनः वापस कर देता है, क्योंकि वह अपनी बहादुरी का खिताब किसी की

खुशियों को कुचलकर नहीं पाना चाहता था| “मैना अचल खड़ी रही| युवक ने गठरी मैना के सामने रखकर कहा-सुन्दरी| मेरी नीचता को क्षमा करना ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे| युवक लौटने लगा| मैना ने द्वार रोककर कहा-तुम्हारे सिपाही कहाँ हैं?

‘मैं सिपाही नहीं रहा|’

‘तब तुम अफसर हो गए|’

‘मैं साधारण मनुष्य रह गया|’

‘क्या ओहदा नहीं मिला?’

‘नहीं|’

‘क्या अफसर को विश्वास नहीं आया?’

‘मैंने यह गठरी पेश ही नहीं की, मैं वैसी ही लौटा लाया हूँ|’

‘क्यों?’

‘तुम्हारे विश्वास पर विश्वासघात करना शक्य न था|”[25]

इस प्रकार से सिपाही रामसिंह ने अपने प्रेम को पाने के लिये एवं उस मैना की मासूमियत और उसके सद्व्यवहार से प्रसन्न होकर, बड़ा अफसर बनने के अपने सपनों को तोड़ देता है और पूरा बरामद माल उसके घर पर पहुंचा देता है। जब उसके पति को मालूम चला कि मैना ने उस सिपाही के साथ मिलकर उसके द्वारा कमाये हुए खजाने को उस सिपाही को दे दिया था तब उसको अत्यधिक क्रोध आता है और वह

उसको इस अविश्वास की सजा देने की प्रतिज्ञा करता है| अन्ततः अपनी पत्नी मैना को वह चाकू से मार डालता है। यह देखकर सिपाही रामसिंह को अत्यंत क्रोध आता है और वह मैना के पति नन्दू की हत्या कर देता है|

4- सुख-दान-

यह कहानी एक ऐसी स्त्री की दास्तान को व्यक्त करती है जिसने अपने सारे सुखों की तिलांजलि देकर एक ऐसे वृद्ध आदमी को अपना जीवन साथी बनाती है जो कि उससे उम्र में कई गुना बड़ा था पर हालात से समझौता करते हुए वह अपने पिता के वचनों की लाज रखती है| जिस जीजा विद्यानाथ के संरक्षण में उनके घर पर रहकर ही उसने अक्षराभ्यास किया था, उसी बहन के अचानक चल बसने के बाद उसके पति अर्थात् अपने जीजा के साथ ही उसको शादी करनी पड़े, वह भी एक उम्रदराज पुरुष के साथ तो भला कोई स्त्री या लड़की यह बात कैसे सहन कर सकती है| अपनी शादी के पश्चात जब पहली रात को विद्यानाथ सुषमा से नजरें नहीं मिला पाते हैं तब सुषमा को लगता है कि विद्यानाथ भी उससे विवाह करके पश्चाताप कर रहे हैं| इस कहानी के स्त्री पात्रों में केवल सुषमा ही है|

सुषमा-

सुषमा एक ऐसी लड़की है जो अपने जीजी और जीजा के संग ही उनके घर पर रहती थी| सुषमा की पढ़ाई लिखाई उसके जीजा ने ही पूर्ण कराया था| उसके जीजा विद्यानाथ सुषमा को बचपन से ही अक्षराभ्यास कराते थे और पढ़ा-लिखाकर आगे की पढ़ाई के लिये पूर्ण रूप से तैयार किये थे| फिर एक दिन पत्नी के मर जाने के उपरान्त जब विद्यानाथ की दूसरी शादी का प्रस्ताव रखा गया तो सबने यही कहा कि पत्नी की छोटी बहन सुषमा से ही विद्यानाथ का विवाह कर दिया जाए| कुछ दिनों के बाद सुषमा की शादी उसके जीजा से ही (विद्यानाथ से) तय कर दी गई, पर किसी ने सुषमा की मरजी भी जानना मुनासिब नहीं समझा| यही तो हमारे समाज में अक्सर देखने को मिलता है कि लड़कियों की मर्जी जाने बगैर हम सब उसके जीवन साथी को चुनकर उसकी शादी करा देते हैं| भले ही उसके भयंकर दुष्परिणाम हमें भविष्य में देखने को मिले| जो लड़कियां सुषमा की तरह संस्कारी तथा माता-पिता की लाज रखने वाली होती हैं, वे आज भी यह कड़वा घूँट पीकर सहन कर लेती हैं और अपनी मर्जी न होते हुए भी, उस व्यक्ति के साथ सम्पूर्ण जीवन यापन करने के लिये तैयार हो जाती हैं| यही तो सुषमा भी करती है| एक तरफ उसके पिता रामानन्द थे तो दूसरी तरफ उसके जीजा विद्यानाथ, जिसने उसे बचपन से ही पढ़ा-लिखाकर एक अच्छा इंसान बनाया था| आखिर वह मना भी करती तो कैसे| यही सब सोचकर सुषमा ने भी अपने से

उम्रदराज पुरुष के साथ सहर्ष विवाह करना उचित समझा| तभी तो शादी के पश्चात वह अपने पति विद्यानाथ से विवाह करने के सम्बन्ध में कहती है- “देख रही हूँ! पर हम एक तो हैं ही| आज से नहीं तभी से जब मैं इतनी-सी थी| मेरी सारी जमा पूँजी तो आप ही की है| आपने मुझे अक्षराभ्यास कराया और कालेज की डिग्री दिलाई| आपके विचार, आपकी प्रतिभा, आपके आदर्श सभी तो मेरी नस-नस में है| आप ही तो मुझे अपने मस्तिष्क की प्रतिलिपि कहा करते थे|”[26]

सुषमा और विद्यानाथ धीरे-धीरे एक दूसरे को समझते हुए समन्वय स्थापित कर जीवन की एक नयी शुरुआत करते हैं| मुशी प्रेमचन्द जी भी सुषमा की ही भांति अपनी ‘एक्ट्रेस’ कहानी में तारा और कुंवर साहब के विषय में वर्णन करते हुए लिखते हैं कि “प्रियतम मुझे क्षमा करना| मैं अपने को तुम्हारी दासी बनने के योग्य नहीं पाती| तुमने मुझे प्रेम का वह स्वरूप दिखा दिया जिसकी इस जीवन में मैं आशा न कर सकती थी| मेंरे लिए इतना ही बहुत है| मैं जब तक जिऊंगी, तुम्हारे प्रेम में मग्न रहूंगी| मुझे ऐसा जान पड़ रहा है कि प्रेम की स्मृति में प्रेम के भोग से कही अधिक माधुर्य और आनन्द है| मैं फिर आऊंगी, फिर तुम्हारे दर्शन करूंगी लेकिन उसी दशा में जब तुम विवाह कर लोगे|”[27]

सुषमा ने अपने सुखों को विद्यानाथ के लिये दान कर दिया| हर प्रकार से उनके साथ एकाकार होने का सफल प्रयास किया| वह हमेशा विद्यानाथ को आप कहकर बुलाती थी| मगर उसके पति चाहते थे कि वो

उन्हें तुम कहकर बुलाए जिससे दोनों के बीच की झिझक व सुषमा के अन्दर से भय दूर हो जाये| मगर सुषमा उनके इस प्रश्न पर कहती है कि जब मेंरे पिता जी आपको आप कहकर पुकारते हैं तो इतनी बड़ी तो मैं खुद भी नहीं हूँ कि अपने पति को तुम कहकर पुकारूँ| रही बात एक होने की या भय दूर होने की तो ऐसी कोई बात नहीं है कि हम आपसे अलग हैं या मैं आपसे डरती हूँ| "एक बार मुझे तुम कहकर पुकारो सुषमा! मुझे सब कुछ मिल जाएगा! यह तुम्हारी 'आप' तुम्हारी 'न' का प्रतिनिधित्व कर रहा हैं| जब तक तुम ऐसा नहीं करती, हम तुम दूर-दूर हैं और अब जबकि हम पति-पत्नी हैं, ऐसा होना कितना बुरा है| सुषमा ने धीरे से कहा 'आप' इतने बड़े हैं, इतने विद्वान| लोग आपका इतना आदर करते हैं कि बाबूजी भी आपको तुम नहीं कह पाते| फिर मैं कैसे कह सकूंगी|"[28]

सुषमा की बदौलत उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति होती है। विद्यानाथ इतना अधिक खुश होते हैं कि जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती| ख़ुशी के मारे उन्होंने तुरन्त अपनी जेब से एक बहुमूल्य हार निकालकर सुषमा के गले में डालते हुए कहा- अब बहुत बड़ा सुख है| कहो यह सुखदान किसने किया| सुषमा उनकी तुम सुनने की इच्छा को ध्यान में रखते हुए तपाक से कहती है कि तुमने! विद्यानाथ पुनः कहते हैं कि नहीं तुमने|

सुषमा कहती है नहीं तुमने, इस तरह पूरा परिवार एक साथ मिल जुलकर अपना आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगता है|

5- भाई की विदाई-

यह एक ऐसी दर्द भरी कहानी है जिसमें एक युवती के सामने ही उसके साथ अभद्र व्यवहार करने वाले गुंडे की गोली मारकर हत्या कर दी जाती है| गोली चलाने वाला कोई और नहीं बल्कि उस अपराधी का ही मालिक डाकू देवीसिंह था| जब उस घर की युवती कृष्णा ने उस डाकू से कहा कि तुमने ऐसा क्यों किया ? जब तुम लोग एक ही गिरोह के आदमी हो तो तुम उसे मारकर, मुझसे माफी क्यूं मांगते हो? तुम्हारा कार्य समाज को खोखला करना, लूटना और बर्बाद करना है तो तुम ऐसा किसलिए करते हो? इस पर डाकू देवीसिंह विनम्रतापूर्वक कहता है- कि हे बहिन! तुम नहीं जानती इस अपराधी ने इतना बड़ा पाप किया है कि इसे माफ ही नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसने तुम जैसी युवती पर अत्याचार करके हमारे दल को छिन्न-भिन्न कर दिया है| यह तो अपराधी है ही परन्तु एक अपराधी वह होता है जिसे माफ किया जा सकता है लेकिन यह तो माफी के भी काबिल नहीं, इसकी तरफ से मैं तुमसे माफ़ी मांगता हूँ! बहिन तुम मुझे माफ़ कर दो| जब तक तुम मुझे माफ़ नहीं करोगी तब तक मैं अपने आपको कभी खुश नहीं रख पाऊंगा। मेरी आत्मा बराबर मुझे कोसती रहेगी कि यह मैंने क्या कर डाला| यदि तुम मुझे माफ नहीं करोगी तो मैं अपने आपको भी गोली मार लूँगा और आजीवन मेरी आत्मा तड़पती रहेगी| इतना सुनने के पश्चात कृष्णा की आँखों से आसुओं की धारा बह चली और वह उस डाकू से कहती है कि

जाओ मैंने तुम्हें माफ किया| यदि तुम इतना अच्छा कार्य करते हो, किसी का दिल नहीं तोड़ते हो तो तुम चोरी-डकैती, लूटपाट, किसलिये करते हो? इन पैसों का क्या करते हो तुम? क्या इस तरह के कृत्य से कभी शर्मिन्दा नहीं होते हो? इस पर देवीसिंह कहता है कि "मेरे साथी को जब तक तुम क्षमा न करोगी, खड़ा न हूँगा या तो क्षमा करो या मुझे गोली मारो, पिस्तौल तुम्हारे हाथ में है| उसमें अभी चार गोलियां हैं| निशाना साधने की जरूरत नहीं| मेरी खोपड़ी में लगाकर घोड़ा दबा दो| युवक नायक की आँखें सूख गईं| उसके स्वर में तीखापन भी था| बालिका आगे बढ़कर युवक का हाथ पकड़ लिया और उससे कहा- उठो-उठो| तब क्षमा किया"[29]

वह डाकू उस युवती को अपनी बहन बना लेता है और उससे वादा करता है कि मैं तुम्हारी शादी में जरूर आऊंगा। लूट का सारा सामान अपने साथियों से वापस युवती के घर पर ही रखवा देता है और वहाँ से साथियों समेत चला जाता है| वैशाख कृष्णा तेरस थी| आज ही के दिन कृष्णा की शादी थी| घर में काफी धूम - धाम थी| सभी लोग घर के काम-काज में जुटे थे| ज्यों - ज्यों शाम होती जा रही थी कृष्णा प्रत्येक क्षण भाई देवीसिंह की प्रतीक्षा में थी कि वह कब उसके घर की तरफ आता दिखाई पड़ जाये| धीरे-धीरे संध्या हो गई, सारे मेहमान भी आ गये परन्तु देवीसिंह कहीं नजर नहीं आ रहा था| थोड़ी देर बाद एक बहुत ही कमजोर और दुबला पतला व्यक्ति कृष्णा को आते दिखाई पड़ा| वह

व्यक्ति आकर सीधे घर में घुस गया और सभी लोग असमंजस में थे कि अमुक व्यक्ति तो देवीसिंह नहीं है, फिर यह कौन हो सकता है, पूछने पर उसने बताया कि मैं उन्हीं का सन्देश लेकर यहाँ आया हूँ| देवी सिंह को कल प्रातः पांच बजे फांसी होगी| उनका यही सन्देश है कि वे चाहते हैं कि मैं तुम्हारा विवाह सकुशल सम्पन्न होते देखूं और सुबह उन्हें जाकर बताऊं, ताकि वे आसानी से फांसी पर हंसते हुए चढ़ सकें| देवीसिंह ने तुम्हारे लिए एक सन्देश भेजा है कि "अब तुम्हारी जैसी वीर बालाओं को देश के लिये बलिदान होने की जरूरत है| उनसे कहना, मैंने आज से अपने प्राण और शरीर देश के लिये दिए, पर मैं उनका पथ ग्रहण न कर सकूंगी| 'बहिन' प्रत्येक प्रतिभाशाली मस्तिष्क अपने पथ का निर्माता है|"[30]

कहानीकार ने कहानी के माध्यम से देश की सेवा तथा आपसी प्रेम भावना को जाग्रत किया है| जिसके मन में देश सेवा की ज्वाला भड़क रही हो, वह किसी भी परिस्थिति में हो, पीछे नहीं हटेगा| जिस व्यक्ति ने मन में निश्चय कर लिया कि मैं दूसरों के लिए जीऊंगी तो फिर उसे दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती| जिस प्रकार से अमुक कहानी में डाकू देवीसिंह एक बदमाश होते हुए भी लूटपाट, चोरी, डकैती इत्यादि का पैसा, माल, वस्तु इत्यादि सभी चीजें आम जनता में तथा असहायों और गरीबों में बांट देता था| जब एक बदमाश इस तरह के सामाजिक तथा देशहित के लिए कार्य कर सकता है तो हम सब एक अच्छे इंसान क्यों नहीं बन सकते| हमें तो दोगुनी ताकत और उत्साह के साथ इन कार्यों के

लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए| हिंदी के सुप्रसिद्ध नाटककार एवं कहानीकार जयशंकर प्रसाद जी भी अपनी 'गुंडा' नामक कहानी में दुलारी का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि "दुलारी चुपचाप डोली पर जा बैठी| डोली धूप और सायंकाल के धुएं से भरी हुई बनारस की तंग गलियों से होकर शिवालय घाट की ओर चली| श्रावण का अंतिम सोमवार था| राजमाता पन्ना शिवालय में बैठ कर पूजन कर रही थी| दुलारी बाहर बैठी कुछ अन्य गाने वालियों के साथ भजन गा रही थी|"[31]

6- पतिता-

प्रस्तुत कहानी में एक ऐसी दर्दनाक वेश्यावृत्ति का वर्णन किया गया है, जिसे पढ़कर पाठक का हृदय द्रवीभूत हो जाना स्वाभविक है| वेश्यावृत्ति आज हमारे समाज में एक अभिशाप की तरह अपनी जड़ें फैला चुकी है। आज देश के हर कोने में अक्सर इस तरह की घटनाएँ देखने को मिलती रहती हैं| आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी अपनी इस 'पतिता' कहानी के माध्यम से एक ऐसी अबला नारी का सजीव चित्र खींचने का प्रयास करते हैं, जिसे समाज ने ना जाने किस तरह से उसके अंगों को चोटें पहुँचायीं, यातनएं दीं, खून के आंसू रोने पर मजबूर कर दिया| यह कहानी पढ़कर पाठक का हृदय सहज ही इन स्त्रियों की दुरावस्था से द्रवित होकर उनके प्रति गहरी संवेदना से भर जाता है और एक प्रकार की सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है| इस कहानी को अपनी लेखनी के माध्यम से आचार्य जी ने

लगभग 8 मास में पूरी किया था| 'पतिता' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने समाज में उत्पन्न वेश्यावृत्ति को उजागर करने का प्रयास किया है तथा इसे समाज से दूर करने पर अपने विचार प्रस्तुत किया है| प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक वेश्यावृत्ति हमारे समाज में एक अभिशाप की तरह न जाने कितनी जिंदगियों को लीलती चली आ रही है| किस प्रकार से हमारे गांव, क्षेत्र, शहर या जिले इत्यादि की भोली-भाली लड़कियां तथा युवतियां इस वेश्यावृत्ति के बुने हुए जाल में फंस जाती हैं, जहां से उनका निकलना मुश्किल ही नहीं बल्कि कभी-कभी नामुकिन भी हो जाता है| सारी जिन्दगी उस दर्दनाक चक्की में पिसती हुई वे अपने प्राणों को या तो स्वतः त्याग देती हैं अथवा दुःख, कष्ट, वेदना अथवा मानसिक तनाव इत्यादि से ग्रसित होकर अपनी जीवन लीला को समाप्त करने पर मजबूर हो जाती हैं| कई स्त्रियां या लड़कियां तो किसी अपने सगे सम्बन्धियों पर भरोसा करके उस वेश्यावृत्ति के दरवाजे तक पहुँच जाती हैं पर इसमें उनका क्या दोष, जब अपने ही दुश्मन बन जाएं तो बाहरी व्यक्ति तो उसका फायदा उठायेगा ही| ऐसी ही अपनी मौसी के हाथों बिकी आनन्दी की कहानी को लेखक ने प्रमुखता से उठाने का प्रयास किया है| इस कहानी में यदि स्त्री पात्रों की बात की जाए तो आनन्दी, हीरा दो ही पात्र प्रमुख रूप से वर्णित किए गए हैं|

आनन्दी-

आनन्दी गांव की एक सीधी- साधी और भोली - भाली सी लड़की है जो गांव में ही अपनी सखी- सहेलियों के साथ दिन भर उछला-कूदा करती थी| आनन्दी की उम्र मात्र 11 वर्ष थी और वह अपने मां-बाप की इकलौती बेटी थी तथा उनकी गोद में वह बड़े लाड़-प्यार से पली थी| वह गाँव में हमेशा सबके साथ हंसती-खेलती रहती थी| जब सुनहरी धूप होती थी तो वह तितली की भांति उछलती-कूदती। सामने की हरी-भरी पर्वत श्रेणियों पर हंसते हुए दौड़-धूप करती थी। पड़ोसिनें भी उसके सामने से हरे चारा का गट्ठर बांधे हुए जब निकलती थीं तो उसे बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता था| वह झरने के मोती के समान उज्ज्वल तथा बर्फ के समान ठंडे पानी में पत्थर फेंककर उछालती थी तो बड़ा ही आनन्द मिलता था| कभी-कभार पानी में कागज की नाव बनाकर बहाती थी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहता था| आनंदी यह सोचती थी कि देहात में रहकर जो खुशी मिल रही है वह शायद कहीं न मिले परन्तु जब वह दिल्ली के बारे सुनती है तो उसे बड़ा ही आश्चर्य होता है| उसने दिल्ली के बारे में बहुत सारी तारीफें सुनी थी| बिजली की रोशनी, ट्राम, पंखे, मोटर इत्यादि वस्तुएं उसके लिए किसी स्वप्न की तरह थीं, जिसे देख पाना मुश्किल ही नहीं बल्कि उसके लिए असम्भव सा था, परन्तु जब वह पहली बार अपनी मौसी के साथ दिल्ली आई तो सभी चीजें अपनी स्वयं की आँखों में देखकर उसने अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली समझा|

मौसी का घर आश्चर्य जनक था| "दिल्ली देखकर मैं सचमुच घबरा गई थी और मौसी के घर में घुसते तो भय लगता था| वह घर था! देदीप्यमान इन्द्रभवन| वह सजावट देखकर मेरी आँखें बन्द होने लगीं| बढ़िया रंग-बिरंगे कालीन, दूध के समान उज्ज्वल चाँदनी, बड़े-बड़े मसनद, मखमली गद्दे, मसहरियां, तस्वीर, सिंगारदान, आईने और न जाने क्या-क्या? मेरे पद स्पर्श से, छू लेने से कहीं कोई वस्तु मैली न हो जाए, बिगड़ न जाए, इस भय से मैं सिकुड़कर एक कोने में खड़ी हो गई| मैं मैली कुचैली गाँव की अल्हड़ बच्ची इस घर में कहाँ रहूंगी? रह-रहकर भाग जाने की इच्छा होती थी|"[32]

अभिप्राय यह है कि आनन्दी पहली बार जब दिल्ली पहुँचती है तो वह वहाँ की अतिशय चकाचौंध में खो गई| वह वहां पहुंचकर स्वयं को धन्य समझती थी| उसे लगता था कि सारी खुशियाँ दिल्ली में ही हैं| वह जब ऊपर कमरे में देखती है तो उसे बहुत सारी सुंदर लड़कियां दिखाई दीं| कोई गजरे लगा रही थी तो कोई बाल संवार रही थी, कोई नई साड़ी पहनकर तो कोई क्रीम पाउडर लगाकर तैयार हो रही थी| उस 11 साल की मासूम बच्ची को क्या पता था कि इस सौन्दर्य के पीछे एक वेश्यावृत्ति का बहुत बड़ा महल खड़ा है जो एक बार इस महल में प्रवेश कर गया वह पुनः बाहर निकलने में कभी कामयाब नहीं होता था| उन सबके बीच में एक लड़की सबसे सुन्दर और आकर्षक थी। उसके आगे सभी सुंदरियाँ तुच्छ लगती थीं। उसका नाम था हीरा| हीरा के ही संरक्षण

में आनन्दी को रख दिया गया| वह उसकी मासूमियत पर बहुत तरस खाती थी मगर वह भी बेहद मजबूर थी, क्योंकि उसकी मौसी का हुक्म था कि उसे अच्छी तरह से पहना, ओढ़ाकर, सजाकर तैयार किया जाये| वेश्यावृत्ति के लिए उसकी सगी मौसी ने ही इस प्रकार का कदम उठाया| बताइए जबकि मौसी मां के ही समान होती है|

यहाँ तक तो यह कहा जाता है कि मौसी मां का ही दूसरा रूप है| पर यहां तो एक मौसी ने ही आनन्दी को लाकर वेश्या बना दिया। जिस आनन्दी को नई दुनियां देखनी थी| वह बेचारी पढ़ने-लिखने की उम्र में ही एक वेश्या बना दी जाती है| उसके सारे ख्वाब, सारे सपने चूर हो गये| वह आये दिन किसी न किसी के साथ हम बिस्तर होने को मजबूर थी। वह इस जाल में ऐसी बुरी तरह फंस चुकी थी कि अब वह मरने के बारे में सोचने लगी थी, क्योंकि कभी-कभी उसे राजाओं के द्वारा जबरन शराब भी पीनी पड़ती थी| कई बार तो उसे राजाओं के साथ-साथ उनके नौकरों और चाकरों के साथ भी सामूहिक वेश्यावृत्ति का सामना करना पड़ा। अन्त में जब जबरदस्ती उसे पुरुषों के सामने भेजा जाने लगा तो वह कहती है कि- “मैं मरती हूँ पर पुरुष जाति पर श्राप देती हूँ कि इस पुरुष जाति का नाश हो, इसका वंश नष्ट हो, इसकी मिट्टी ख्वार हो, जो असहाय अबलाओं की पवित्रता और जीवन को अपनी वासनाओं पर कुर्बान करते हैं! यह पुरुष जाति सदा रोग-शोक, दुःख दारिद्रय, पाप, यंत्रणा में अनन्तकाल तक पड़ी रहे|”[33]

इस तरह से उसने अपने आपको सम्पूर्ण खो देने के बाद अर्थात् पूरा शरीर अपवित्र हो जाने पर पूरे पुरुष जाति को श्राप देती है जो पुरुष अबला स्त्री के सम्मान के साथ खेलते हैं| उनका जीवन बर्बाद करते हैं और उन्हें समाज में जीने के लायक नहीं छोड़ते हैं|

हीरा-

हीरा एक बहुत ही सुन्दर युवती थी। बचपन में आनन्दी की तरह ही बहला फुसलाकर उसकी मौसी ने ही हीरा को भी दिल्ली ले जाकर उसे वेश्यावृत्ति करने पर मजबूर कर दिया था| हीरा ने धीरे-धीरे सारे दुःख दर्द को सहते हुए अपना मन पक्का कर लिया था और उसी कार्य को अपनी नियति मान लिया था, क्योंकि वह अच्छी तरह जानती थी कि अस्मत लुट जाने के बाद यहाँ से निकलना कितनी टेढ़ी खीर है| हीरा की खूबसूरती के किस्से चारों तरफ खूब मशहूर थे| एक बार उसकी मनमोहिनी सूरत को जो देख लेता था, वह उसे पाने के लिए तड़प उठता था| यही कारण है कि जब एक बार शुरुआत में ही हीरा को उसकी मौसी ने एक महाराज के पास बहुत सारा पैसा लेकर, भेज दिया था। इन कार्यों से अनजान हीरा को कुछ पता ही न चला कि उसके साथ क्या से क्या होने वाला है|

वह महाराज जब उसे शराब पीने के लिये देता है। हीरा के मना करने के उपरान्त वह एकदम क्रोधित हो जाता है और हीरा को डराते

धमकाते हुए आदेश का उल्लंखन करने की सजा भी बताता है| मगर हीरा बड़ी हिम्मत के साथ खड़ी रही और पूरा जोर लगाकर जबाव देती है कि मैं शराब नहीं पीती, आपके यूं डराने धमकाने से कुछ नहीं होगा| बस फिर क्या था| उस महाराज ने उसकी मौसी को काफी पैसा देकर खरीदा तो था ही सो अपना पैसा डूबते देख वह आपे से बाहर हो गया और "खूंटी से चाबुक उठकार उस निर्दयी ने खाल उड़ाना शुरू कर दिया| चिल्लाने से कमरा गूँज उठा| मैं तड़पकर धरती में लोटने लगी| पर वहाँ बचाने वाला कौन था| वे चाबुक फेंककर बैठ गए| मैं ज्यों ही उठी, उन्होंने प्याला भरकर कहा- पियो| मैं गटगट पी गई| मेरे हाथ से प्याला लेकर उन्होंने मेरे पास आकर कहा- हीरा, मेरी दोस्त! आइन्दा कभी हुक्म उदूली की हिम्मत न करना|"[34]

उसके बाद हीरा को मंहगी से मंहगी साड़ी, जेवर इत्यादि चीजें लाकर दिया गया| फिर क्या था हीरा ने भी अपने आप को चारों तरफ से फंसा हुआ देखकर उसके सामने समर्पण कर दिया| बेचारी हीरा ने न जाने कितनी दुःख, तकलीफों को झेलती हुई चली आ रही थी| कभी-कभी तो मन न होने पर भी उसे जबरदस्ती किसी प्रोग्राम या मुजरे में जाना पड़ता था| जब से आनन्दी उसके पास आ गई, उसे और ज्यादा मेहनत करनी पड़ती थी, क्योंकि आनन्दी की सुख-सुविधा की सारी जिम्मेदारी हीरा पर ही थी| हीरा ने ही उसे अच्छी तरह से गाँव की भोली-भाली लड़की से शहर की खूबसूरत परी की तरह बनाया बनाया था। हीरा इस

काम को बिल्कुल नहीं करना चाहती थी क्योंकि वह भी उसी रास्ते से चलकर वहां पर मीठे सपनों को साकार करने के लिये आई थी| यह सब याद करके उसकी आँखों में आंसू छलक आए| परन्तु भाग्य की मारी वह हीरा कर भी क्या सकती थी| मौसी के आदेश का पालन करते-करते आनन्दी को भी उसी नर्क में ढकेल देने पर मजबूर हो गई| कहानीकार यहाँ पर यह बताना चाहता है कि जब अपने ही इस तरह की नीच हरकत करने लगेंगे तो अन्य लोग और ही अधिक से अधिक प्रताड़ना देंगे ही| जब तक हम पैसे के लालच में यूं ही अपनी बहन-बेटियों को बेचते रहेंगे तब तक यह समाज, देश कभी आगे नहीं बढ़ सकता| हमें अपनी सोच बदलनी होगी और इस जुर्म के खिलाफ मजबूती के साथ लड़ना होगा|

7- मूल्य-

यह एक ऐसी कहानी है जिसमें एक युवती के स्वाभिमान और उसके पति के धन-दौलत के बीच संघर्ष का अद्‌भुत वर्णन किया गया है| आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी की यह बहुप्रसिद्‌ध कहानी है| इस कहानी के द्‌वारा आचार्य जी ने नारी के प्रति अपनी संवेदना तथा पुरुष जाति के प्रति सम्मान प्रकट किया है| इस कहानी में प्रमुख रूप से यदि स्त्री पात्रों की बात की जाए तो अमला, राधा ही प्रमुख हैं। पुरुष पात्रों में नवीन, मिस्टर राबर्ट प्रमुख हैं| यहाँ पर हम केवल स्त्री पात्रों की चर्चा करेंगे|

अमला-

अमला एक निर्धन परिवार की बेटी है जिसके घर में ठीक प्रकार से जीवन यापन के सामान उपलब्ध नहीं है| किसी तरह से उसके पिता कर्ज वगैरह ले-ले कर अपनी जिन्दगी की गाड़ी को खींच रहे थे| जैसे-तैसे करके अपनी पुत्री को पढ़ाया, लिखाया ताकि उसकी बेटी उसके लिये बुढ़ापे की लाठी साबित हो परन्तु गरीबी एक ऐसी बीमारी है जो धीरे-धीरे इंसान को इतना कमजोर व खोखला कर देती है। इन्सान चाहकर भी उससे उबर नहीं पाता| मगर दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो दुनिया में कोई भी कार्य असम्भव नहीं, असम्भव को भी सम्भव करके लोगों ने गरीबी जैसे रोग का समूल नाश भी किया है परन्तु अमला का पिता उस गरीबी की चक्की में पिसता चला गया| एक दिन ऐसा आया जब उसके सिर पर पाँच लाख रुपए का कर्ज चढ़ गया और उसके पास पांच हजार रुपये भी न शेष बचे| एक तो घर में जवान बेटी की शादी की चिंता, उस पर कर्ज की चिन्ता अलग से| बेचारा रात-दिन इसी चिन्ता में सूख कर कांटा होता जा रहा था| मगर जैसा कि अक्सर लोग यह कहते हैं कि जब सारे रास्ते बन्द हो जाते हैं तब ईश्वर कोई न कोई रास्ता खोल ही देता है| ऐसा ही कुछ अमला के पिता के साथ हुआ| एक अमीर आदमी जिसने पांच लाख रुपये कर्ज स्वरूप अमला के पिता को दिया था, उसका नाम नवीन था| नवीन अमला के पिताजी से उस पांच लाख रुपये के बदले में अमला से शादी का प्रस्ताव दिया| मजबूर पिता मरता न तो क्या करता, हामी भर

लिया और अपनी बेटी से पूछा भी न| अमला एम.ए. तक पढ़ी-लिखी थी और समझदार भी बहुत थी| अमला पिताजी की लाज रखने के लिए, न चाहते हुए भी नवीन से शादी कर लेती है परन्तु वह उसे जरा भी प्यार नहीं करती थी|

एक तो नवीन की उम्र अधिक थी। दूसरी बात यह कि वह बड़े गर्व के साथ कहता था कि मैंने तुम्हें पाँच लाख रुपये में खरीद लिया है| सारे विधि-विधान से शादी होने के पश्चात भी अमला अपने दिल में नवीन के लिए जगह नहीं बना पा रही थी| नवीन बहुत ही दौलतमंद व्यक्ति था परन्तु अमला अपनी मर्जी से शादी न होने के कारण, उसको पसन्द नहीं करती थी। जबकि नवीन उसके साथ बड़ी ही शालीनता तथा मोहब्बत से ही बात करता था। वह उसकी हर खुशी का ख्याल रखता था। अमला "बहुत सोचने पर भी उनमें कोई दोष नहीं निकाल पाती| पर उसका गर्वीला हृदय जब इस निर्णय पर पहुँचता था कि यह विवाह उन्होंने रुपए के बल पर किया है और उस पर उनकी यह गर्वोक्ति कि अभी तो उन्होंने सिर्फ खरीदा ही है, वे उसे विजय भी करेंगे तो उस का आत्माभिमान हाहाकार कर उठता था, और वह कहती थी नहीं-नहीं, कभी नहीं| यह आदमी मेरा पति नहीं है| मैं कभी भी इसको आत्मसमर्पण न करूँगी| कभी भी नहीं| भले ही जान चली जाए|"[35]

अमला धीरे-धीरे नवीन का कर्ज उतारना चाहती थी| इसलिए वह चाहती थी कि घर में बेकार पड़े रहने से अच्छा है कि कोई नौकरी

क्यों न कर लूं| “एकाएक उसके मन में आया क्यों न कहीं नौकरी कर लूं? जब मैं उन्हें अपना पति ही नहीं मानती, यह घर ही जब मेरा नहीं तब अतिथि की भांति पड़ी क्यों रहूं? मैं उन अधम स्त्रियों में नहीं हूँ जो पुरुषों के आश्रित रहती हैं और उनका भार कहाती हैं? मैंने एम.ए. पास किया है| मुझे चेष्टा करने से कहीं भी एक अच्छी नौकरी मिल सकती है| उससे मैं अपना वह मूल्य भी चुका दूँगी, जिसमें मैं बेच दी गई हूँ|”[36]

इस प्रकार अपने स्वाभिमान तथा आत्मसम्मान में जीने वाली अमला कुछ समय पश्चात नवीन के ही ऑफिस में एक मैनेजर का पद सम्भालती है। नवीन के मूल्य को वह अपनी तनख्वाह के माध्यम से चुकाना चाहती है| जब कुछ दिनों के लिए नवीन उसे छोड़कर अपनी जापान वाली कम्पनी में कुछ आवश्यक कार्य हेतु जाता है तो अमला नवीन की याद में इतना बेचैन हो जाती है कि वह सब कुछ त्यागकर केवल अपने पति का ही स्मरण करती है और यह महसूस करती है कि नवीन ने उसे जीत लिया है| वापस आकर नवीन अमला को जी भरकर प्यार करता है और सुखपूर्वक उसके साथ रहने लगता है|

राधा-

नवीन और अमला के नये घर में राधा एक नौकरानी थी| वह बेहद सुंदर और कार्य कुशल थी| हर कार्य को बड़े ही सहज ढंग से करने में माहिर थी| उसका स्वभाव बहुत ही मृदु और सरल था| उसका योगदान इस कहानी में इससे ज्यादा नहीं मिलता| आचार्य जी ने अपनी कहानियों में स्त्री पात्रों के द्वारा, स्त्री के स्वाभिमान, मर्यादा, धर्म तथा उसके चरित्र को किसी भी धन- दौलत से युक्त व्यक्ति से अधिक महान तथा शक्तिशाली आंका है| एक स्त्री को कभी भी अपने जीवन में धन-दौलत के पीछे नहीं भागने का संदेश दिया है| एक स्त्री अपनी शिक्षा तथा कर्मों के माध्यम से वह स्वयं अपने जीवन की किसी भी परिस्थिति से लड़ सकती है तथा अपने जीवन को सरल, समृद्धशाली एवं सामाजिक जीवन के अनुकूल बना सकती है| वह कभी भी किसी पर पुरुष के आगे हाथ फैलाने को मोहताज नहीं हो सकती है, यदि उसके अंदर दृढ़ इच्छा शक्ति एवं कड़ी मेहनत करने का गुण विद्यमान है|

हमारे देश में एक से बढ़कर एक वीर नारियाँ हुई हैं जिन्होंने देश के लिए अपना सबकुछ कुर्बान कर दिया परन्तु अपने स्वाभिमान तथा चरित्र पर आंच नहीं आने दिया। उन्होंने अपने सत्कर्मों और दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा इस देश की तस्वीर बदल डाली|

वर्गगत पात्र -:

आचार्य जी की कहानियों में जीवन के नये-नये आयाम दिखाई पड़ते हैं| समाज के विभिन्न पहलुओं एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक कर्तव्यों, धार्मिक मान्यताओं एवं मूल्यों इत्यादि से सम्बंधित विशेष जानकारी मिलती है| कहानियों के पात्र स्वंय बोलते दिखाई पड़ते हैं| जिंदादिली और कुशल नेतृत्व की क्षमता भरी हुई दिखाई पड़ती है| वर्गगत पात्रों के अन्तर्गत स्त्री पात्र निम्नलिखित हैं-

1- पतिता-

पतिता कहानी एक वेश्या के जीवन पर आधारित है जो युवती होने से पूर्व ही खेलने, खाने की उम्र में वेश्याओं के सम्पर्क में पहुँच जाती है| जहाँ से उसे एक दुर्भाग्यपूर्ण जीवन की शुरुआत दिल पर पत्थर रखकर मजबूरन करनी पड़ती है| उस नर्क में उसका जीना, किसी मौत से कम नहीं था| जब मौत आती है तो व्यक्ति एक बार ही मरता है परन्तु उस वेश्या की मौत तो हर-रोज होती है| उसके जिस्म को रोज खोंचा और खसोटा जाता है| वह चाहकर भी उस नर्क से नहीं निकल पाती| ऐसी दर्द भरी कहानी को पढ़कर हर पाठक की संवेदना और सहानुभूति, उसके प्रति न चाहकर भी हो ही जाती है| उस वेश्या का नाम आनन्दी था|

आनन्दी-

आनन्दी की उम्र मात्र ग्यारह वर्ष की ही थी जब वह अपनी मौसी के साथ दिल्ली की चकाचौंध में पहुँची थी| आनन्दी की मौसी उसे दिल्ली के न जाने कैसे-कैसे सपने दिखाकर ले जाती है और वहाँ पर अपने वेश्यालय में उसे भर्ती कर देती है| आनन्दी का सारा बचपन, सहेलियों के साथ खेलना, दौड़ना, नृत्य गान करना सब कुछ बन्द हो गया| वह अपने खूबसूरत गाँव से बड़ी दूर दिल्ली जैसे बड़े शहर में पहुँच गई थी| धीरे-धीरे आनन्दी वेश्यालय में रहते हुए इतनी अभ्यस्त हो गई कि उसे उस वेश्यालय में आने वाली अन्य लड़कियों को भी वहीं कार्य करवाना पड़ता| जिसे वह स्वयं मजबूरन करती थी वह अब अपने पूरे वेश्या वर्ग की प्रधान हो गई थी| जैसे उसके साथ हुआ था, वही अब दूसरों के साथ उसे न चाहते हुए करना पड़ता था|

2- मास्टर साहब-

यह कहानी एक ऐसे दम्पति की है जिनके विचार बिल्कुल अलग हैं| बेचारा पति एक प्राइवेट विद्यालय में चालीस रुपए रोज की तनख्वाह पर नौकरी करता है परन्तु उसकी पत्नी भामा अत्यंत खर्चीली तथा नकचढ़ी थी| वह एक अमीर बाप की बेटी थी शायद इसलिए वह चाहती थी कि उसके पति भी उसे मंहगी से मंहगी और अच्छी से अच्छी चीजें लाकर दें| भामा ऐसी महिला थी जो अपनी स्वतंत्रता के लिये अपने पति

और प्रभा नाम की एक छोटी सी लड़की को छोड़कर 'आजाद महिला संघ' में सम्मिलित हो जाती है| कुछ समय पश्चात वह संघ की एक लीडर हो जाती है और पूरे वर्ग को अपने विचारों के हिसाब से चलाती है| अंततः जब उसकी आंख खुलती है तब उसे अपने पति और अपनी पुत्री की ही याद आती है| तीन वर्ष तक दुनियादारी देखने समझने के उपरान्त वह पुनः उसी घर में, पेट में किसी और का बच्चा लेकर आती है और इन सब के बावजूद उसका पति उसे अपना लेता है|

भामा-

भामा एक पढ़ी लिखी तथा समझदार महिला है| वह हमेशा अच्छे खान-पान, रहन-सहन तथा पहनावे इत्यादि के बारे में ही सोचती रहती है| वह अपने पति की क्षुद्र तनख्वाह होने के कारण घर छोड़कर चली जाती है तथा कुछ औरतों की संगत में पकड़कर 'आजाद महिला संघ' में प्रवेश लेकर अपने घर का त्याग कर देती है| धीरे-धीरे वह एक कुशल नेतृत्व वाली महिला बन जाती है और अपने पूरे समूह को हैंडल करती है- "जलसे में भामा एक सप्ताह व्यस्त रही| वह अपने घर न आ सकी| आठ दिन बाद आई तो उसके रंग-ढंग ही बदले हुए थे| उसमें लीडरी की बू आ गई थी| अब वह एक बच्ची की माँ, एक पति की पत्नी, एक घर की गृहणी नहीं- एक आधुनिकतम महिला उद्धारक स्त्री थी|"[37]

सुषमा-

सुषमा एक ऐसी महिला है जिसके व्यक्तित्व की एक अलग ही पहचान है| सुन्दरता की मूर्ति के साथ-साथ वह सरल स्वभाव, मृदु, भाषी, संयमी, कोमल हृदय, शान्त प्रकृति जैसे गुणों से युक्त है| सुषमा के पति का नाम चौधरी साहब था| चौधरी साहब भी सुषमा का बराबर ख्याल रखते थे तथा उसकी हर जरूरत को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे| सुषमा एक पढ़ी लिखी तथा सभ्य महिला थी| उसके पास परिवार और समाज को समेटकर एक साथ मिल जुलकर रहने तथा कुशल नेतृत्व की पूर्ण क्षमता थी| वह अपने पूरे परिवार के सदस्यों तथा ग्रामवासियों को मिलाकर किसी भी कार्य के लिये आगे-आगे चलती थी| उसने कभी भी अपने पति या किसी और व्यक्ति के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं किया| जिस कारण से लोग उसे सम्मान भी अत्यधिक देते थे| चौधरी साहब सुषमा के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कहते हैं कि “सुषमा ने आकर मेरे जीवन को एक नया मोड़ दिया| सुषमा जैसी पत्नी पाकर मैं कृतार्थ हो गया| वह जैसी सुशिक्षित है, वैसी ही शीलवती, परिश्रमी और हंसमुख स्वभाव की है|”[38]

व्यक्ति पात्र :-

व्यक्ति पात्र के अंतर्गत ऐसे पात्र आते हैं जो अपनी निजी विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं| 'मूल्य' कहानी की अमला एक ऐसी ही पात्र है| वह अपने पिता के द्वारा तय किये गए रिश्ते को पसंद न करते हुए भी मान लेती है, क्योंकि वह पिता के आत्म सम्मान को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती थी। इसलिए उनके कार्यों और उनकी प्रेम भावना को ध्यान में रखते हुए वह मना न कर सकी| पिताजी ने जब अमला से कहा कि उनकी इज्जत-आबरू, मान सम्मान, कुल की प्रतिष्ठा आदि सभी कुछ उसके हाथ में है| यदि पिता द्वारा पसन्द किया हुआ लड़का नवीन से अमला ब्याह नहीं करेगी तो वे पथ के भिखारी हो जायेंगे तब अमला उनकी हर बात शिरोधार्य करके खुशी-खुशी विवाह कर लेती है| अमला एक ऐसी व्यक्ति पात्र है कि वह शादी के पश्चात नवीन के द्वारा दिए गए उसके पिता जी को पाँच लाख रुपए कर्ज को भी अपनी स्वयं की कमाई से चुकाने का पूर्ण यत्न करती है पर अपने पति नवीन के लाखों-करोड़ों की जायदाद पर लालचपन को अपने हृदय में जरा भी पनपने नहीं देती। वह नवीन से कहती है कि मैं जब तक तुम्हारे पाँच लाख रुपए वापस नहीं कर दूँगी तब तक मेरा हृदय उस कर्ज से दबा रहेगा, क्योंकि मेरे पिताजी ने उसी कर्ज को उतारने की बदौलत मेरा विवाह तुम्हारे साथ किया था| अमला एक स्वाभिमानी स्त्री थी। जीवन में कुछ भी हो जाये पर वह कभी अपने स्वाभिमान को गिरने नहीं देती| धन्य-धान्य से

परिपूर्ण होते हुए भी वह कोई एक अच्छी सी नौकरी की तलाश में जुट जाती है ताकि वह अपने पिताजी के कर्ज को चुका सके "एकाएक उसके मन में आया-क्यों न मैं कहीं कोई नौकरी कर लूं? जब मैं उन्हें पति ही नहीं मानती, यह घर मेरा नहीं, तब अतिथि की भांति पड़ी क्यों रहूँ? मैं उन अधम स्त्रियों में नहीं हूँ, जो पुरुषों के आश्रित रहती हैं और उनका भार कहाती हैं? मैंने एम.ए. पास किया है| मुझे चेष्टा करने से कहीं भी एक अच्छी नौकरी मिल सकती है| उससे मैं अपना वह मूल्य भी चुका दूँगी, जिसमें मैं बेच दी गई हूँ|"[39]

रात-दिन कठिन परिश्रम करके वह धीरे-धीरे काफी धन एकत्रित करती है और अपने पिताजी के कर्ज को उतारने का प्रयास निरतंर करती रहती है| अमला के अंदर जो त्याग, साहस, स्वाभिमान, धैर्य और कुशल नेतृत्व क्षमता थी, वह उसकी चारित्रिक विशेषताओं की अभिव्यक्ति करती है। अमला जैसी वीर तथा समाज से लड़ने वाली नारियां उन तमाम कमजोर और बुजदिल स्त्रियों के लिये एक प्रेरणा स्रोत रही हैं, जिन्हें अपने जीवन में आत्मसात करके कोई भी स्त्री अपने जीवन को संवार सकती है|

रम्भा-

रम्भा एक व्यक्ति पात्र के रूप में उभरकर सामने आती है| रम्भा एक ऐसी लड़की है जो बचपन से ही स्वावलंबी तथा बहुत ही साहसी

बालिका थी| जंगलों से फूल बीनकर लाना और उनको बाजार में बेचना उसका नित्य का काम था| बड़ी हो जाने पर वह एक नृत्य नाटिका मंडली में सम्मिलित हो जाती है| धीरे-धीरे वह बहुत ही अमीर तथा अहंकारी हो जाती है। वह अपने बचपन के प्रेम को भुला देती है, क्योंकि अब वह अच्छी-खासी कमाई करती है और लोग उससे मिलने के लिये समय मांगते हैं| बंशी भी एक बार अपनी दोस्त रम्भा से जब मिलने के लिये जाता है तो रम्भा अपने दोस्त बंशी की दयनीय स्थिति और साधारण कपड़ों को देखकर वह उससे नहीं मिलना चाहती| अंततः निराश होकर बंशी पुनः घर वापस चला आता है मगर बंशी चाहकर भी रम्भा को भुला नहीं पाता, लेकिन नियति कब कौन सा खेल, खेल दे यह कोई नहीं जानता| यही हुआ, एक दिन अचानक रम्भा की एक हादसे में दोनों आंखें चली जाती हैं| उसके सारे मित्र और रिश्तेदार उससे किनारा कर लेते हैं| रम्भा एकदम से निराश हो जाती है| उसका इलाज में सारा पैसा खत्म हो जाता है, वह एकदम से बेसहारा हो जाती है| उसका नया प्रेमी भी उसे छोड़कर चला जाता है। अन्त में जब उसे कोई और सहारा मिलते ना दिखाई पड़ा तो एक बार पुनः उसे अपने पूर्व दोस्त बंशी की याद आती है। वह उसके घर संदेश भेजकर उसे अपने पास बुलवाती है| बंशी की माँ को जैसे ही खबर मिलती है वह तत्क्षण रम्भा को अपने घर ले आती है| बंशी जब रम्भा की ऐसी हालत देखता है तो उसे बहुत कष्ट होता है। वह उसे अपनी जीवन संगिनी बनाने का वादा करता है और रम्भा से कहता

है कि क्या तुम मुझसे शादी करोगी? तब रम्भा आश्चर्यपूर्वक बंशी से कहती है कि क्या तुम मेरी दोनों आंखों की रोशनी जाने के बाद भी मुझे अपनाओगे? तब बंशी मुस्कुराकर रम्भा से कहता है कि मैं तुम्हारी आँखों को नहीं, तुम्हें चाहता हूँ|

प्रस्तुत अध्याय में आचार्य जी ने अपनी कहानियों में वर्णित स्त्री पात्रों के द्‌वारा समाज को एक नई प्रेरणा प्रदान की है कि कैसे हमें अपनी मुसीबतों से मुंह फेरने के बजाय, परिस्थितयों का सामना करते हुए कैसे उनसे निपटा जा सके। आज की स्त्रियां पुरुषों से किसी भी मायने में कमजोर नहीं हैं। वह अपनी आत्मरक्षा, सामाजिक कर्तव्यों और अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन करना जानती हैं। शास्त्री जी ने प्रस्तुत अध्याय में स्त्री पात्रों द्‌वारा भारतीय संस्कृति, सभ्यता, रीति रिवाजों एवं खान - पान इत्यादि पर भी प्रकाश डाला है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. तातेड़, प्रो0 (डॉ.) सोहनराज, मध्यकालीन भारत का इतिहास भाग-1, 2014, जयपुर, पारीक बुक डिस्ट्रीब्यूटर्श, पृष्ठ 94
2. शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, बाहर-भीतर (वीर-बादल), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 157
3. चन्द्र, सतीश, मध्यकालीन भारत राजनीति, समाज और संस्कृति, 2008, हैदराबाद, ओरियंट ब्लैक स्वान, पृष्ठ 281
4. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (नूरजहाँ का कौशल), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 30
5. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (नूरजहाँ का कौशल), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 31
6. तिवारी, डॉ. रामचंद्र, हिंदी का गद्य साहित्य, 2012, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृष्ठ 155
7. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (रघुपति सिंह), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 167
8. शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, बाहर-भीतर (जैसलमेर की राजकुमारी), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 147
9. शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, बाहर-भीतर (जैसलमेर की राजकुमारी), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 148-49

10. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (चौथी भांवर), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 132
11. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (सोया हुआ शहर), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 10
12. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (सोया हुआ शहर), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 9-10
13. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (सोया हुआ शहर), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 10-11
14. चन्द्र, सतीश, मध्यकालीन भारत राजनीति, समाज और संस्कृति, 2008, हैदराबाद, ओरियंट ब्लैक स्वान, पृष्ठ 281-82
15. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (दुखवा मैं कासे कहों मोरी सजनी), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 11
16. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (दुखवा मैं कासे कहों मोरी सजनी), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 11-12
17. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (दुखवा मैं कासे कहों मोरी सजनी), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 15-16

18. ‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (दुखवा मैं कासे कहों मोरी सजनी), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 16
19. ‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (दुखवा मैं कासे कहों मोरी सजनी), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 18
20. शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, बाहर-भीतर (लालारुख), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 20
21. शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, बाहर-भीतर (लालारुख), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 23
22. ‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (मैं तुम्हारी आँखों को नहीं, तुम्हें चाहता हूँ), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 264
23. ‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (मैं तुम्हारी आँखों को नहीं, तुम्हें चाहता हूँ), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 266
24. ‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (मैं तुम्हारी आँखों को नहीं, तुम्हें चाहता हूँ), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 267

25. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, धरती और आसमान (विश्वास पर विश्वास), 2008, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 131
26. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (सुख-दान), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 49
27. प्रेमचंद, 41 अनमोल कहानियां (आखिरी मंजिल) 2021, नोएडा, माप्ले प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ 180
28. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (सुख-दान), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 59
29. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई (भाई की विदाई), 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 90
30. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई (भाई की विदाई), 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 96
31. प्रसाद, जयशंकर, जयशंकर प्रसाद की लोकप्रिय कहानियां (गुण्डा), 2021, नई दिल्ली, प्रभात पेपर बैक्स, पृष्ठ 60
32. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (पतिता), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 211
33. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (पतिता), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 231-32
34. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (पतिता), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 220-21

35. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (मूल्य), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 58

36. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (मूल्य), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 61

37. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई (मास्टर साहब), 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 223

38. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई (कहानी खत्म हो गई), 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 14

39. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (मूल्य), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 61